" मुझे याद रखना "

(पुस्तक के कुछ अंश)

आज ही हरिद्वार से देहरादून आया हूँ। सच में देहरादून की खूबसूरती के बारे में जितना सुना है उससे कहीं ज्यादा खूबसूरत जगह है यह। रास्ते भर प्रकृति की सुंदरता देखता आया पर यहाँ इस पुलिस क्वार्टर में देख रहा हूँ कि सारा सामान बिखरा पड़ा है और सफर की वजह से एक भी सामान रखने का मन नहीं हो रहा है यूँ तो मेरे सारे काम करने के लिए रामू काका हैं पर अपने कुछ काम तो करने ही हैं, खैर अब तो आदत सी हो गई है सामान रखने और समेटने की। क्या करें एस. पी. की जॉब ही ऐसी है कि ट्रांसफर होता ही रहता है । दरअसल मुझे यहाँ इसलिए भेजा गया है क्योंकि आजकल यहाँ काफी मर्डर्स हो रहे हैं और उनकी गुत्थी सुलझने का नाम ही नहीं लेती और मेरा अबतक का रिकॉर्ड देखकर ही यहाँ पर मेरा ट्रांसफर किया गया है। आगे............

आज ही हरिद्वार से देहरादून आया हूँ। सच में देहरादून की खूबसूरती के बारे में जितना सुना है उससे कहीं ज्यादा खूबसूरत जगह है यह। रास्ते भर प्रकृति की सुंदरता देखता आया पर यहाँ इस पुलिस क्वार्टर में देख रहा हूँ कि सारा सामान बिखरा पड़ा है और सफर की वजह से एक भी सामान रखने का मन नहीं हो रहा है यूँ तो मेरे सारे काम करने के लिए रामू काका हैं पर अपने कुछ काम तो करने ही हैं, खैर अब तो आदत सी हो गई है सामान रखने और समेटने की। क्या करें एस. पी. की जॉब ही ऐसी है कि ट्रांसफर होता ही रहता है । दरअसल मुझे यहाँ इसलिए भेजा गया है क्योंकि आजकल यहाँ काफी मर्डर्स हो रहे हैं और उनकी गुत्थी सुलझने का नाम ही नहीं लेती और मेरा अबतक का रिकॉर्ड देखकर ही यहाँ पर मेरा ट्रांसफर किया गया है।

आज तो इतना थक गया हूँ कि कुछ बनाने का मन नहीं हो रहा है और इस वक्त रामू काका को परेशान करने का मेरा कोई इरादा नहीं है, पर माँ ने कसम खिला के भेजा है कि दोनों वक्त का खाना जरूर खाना है तो नूडल्स बना लिए...... हम्म अच्छे बने हैं इस जॉब ने मुझे परिवार से दूर करने के साथ साथ एक अच्छा कुक भी बना दिया है। अब यूनिफार्म निकाल लेता हूँ ताकि कल सुबह वापस ऑफिस जॉइन कर सकूँ पिछली बार जॉइन तो कर लिया पर घर पर सबके साथ कुछ समय बिताने के लिए छुट्टियाँ ले रखी थी......अरे यार इसकी तो प्रेस ही खराब हो गई अब इतनी रात को कौन प्रेस करके देगा, खुद ही करना पड़ेगा।

शायद मैं बना ही हूँ खाकी के लिए तभी तो बचपन से ही सबसे पसंदीदा रंग खाकी लगता है और जब थोड़ी समझ आई तो पापा को देखा, कितना रॉब है उनकी आवाज में, उनके काम में, पापा ने अपना फर्ज पूरी ईमानदारी और जिम्मेदारी से निभाया है।उनकी ईमानदारी और हिम्मत के चलते उन्हें पुलिस डिपार्टमैंट से काफी मैडल्स भी मिले हैं और पापा को देखकर ही मुझ पर भी पुलिस डिपार्टमैंट जॉइन करने का भूत चढ़ गया जो कि मेरे एस. पी. बनने पर ही उतरा। अब पापा की तरह मेरी वर्दी पर भी मैडल्स है पर अभी तो सिर्फ दो ही हैं और इस वर्दी पर हर्षद प्रताप सिंह देखकर लगता है जैसे चाँद तोड़ लिया है.....अरे हर्षद प्रताप सिंह मैं ही हूँ...... मेरे दोस्त अक्सर मुझसे कहते " भाई तू कहाँ पुलिस के चक्कर में पड़ रहा है, तू पुलिस डिपार्टमैंट के लिए नहीं बल्कि ऐक्टिंग के लिए बना है कभी आइने में देख खुद को। " तो मैं भी हंस कर कहता " भाई ऐक्टिंग में, हीरोपंती में क्या रखा है वो सब तो दिखावा होता है, असली हीरो तो पुलिस और आर्मी वाले होते हैं जो अपने देश के लिए कुछ भी कर गुजरने का जज्बा रखते हैं। " यह सुनकर वो सब हंस कर कहते " भाई तू जल्दी पुलिस डिपार्टमैंट जॉइन कर और हमें भी कुछ खिला पिला " और आज भी मैं उनको खिला पिला के ही आ रहा हूँ, बोले " भाई तू जा रहा है अब पता नहीं कब मिले एक पार्टी तो बनती है " और इसी तरह मेरी सैलेरी का बीस प्रतिशत भाग ये लोग खा पी

जाते हैं और बाकी सब कुछ मैं पापा को देता हूँ जिनकी वजह से मैं इन ऊँचाइयों तक पहुंचा हूँ, वो मना करते हैं पर उन्हें अपनी सैलेरी देकर जो खुशी मिलती है वो कहीं नहीं मिल सकती। पापा, माँ, भैया, भाभी और अनन्या सभी मुझ पर गर्व करते हैं और इन सबकी वजह से ही मैं बिना किसी चिंता के अपनी नौकरी कर सकता हूँ क्योंकि मुझे पता है कि मेरे पीछे से भैया भाभी और अनन्या माँ पापा का पूरा ध्यान रखते हैं।

अरे इस वक्त किसका मैसेज है! ओह.....अनन्या है मुझे तो लगा यह भूल ही गई कि मैं अब हरिद्वार में नहीं देहरादून में हूँ और अब रोज इससे मिल भी नहीं पाउंगा। ये भी कितनी पागल है और मुझे भी पागल कर रखा है। पहली बार स्कूल में देखा था मैंने अनन्या को और जब मुझसे ज्यादा मार्क्स लाई तो मैं चिढ़ गया था क्योंकि मैं हमेशा से हर चीज़ में फर्स्ट रहा था। पर धीरे धीरे हमारी फीलिंग्स बदल गई और उसे मुझसे प्यार हो गया और मुझे उससे पर मैं शायद समझ नहीं पाया और हमारी फेयरवैल पार्टी में उसने मुझे प्रपोज किया तो मैंने उसे सॉरी कह दिया। फिर कोइंसिडेंटली हमने एक ही कॉलेज में एडमिशन लिया पर इस बार जब मैंने अनन्या को देखा, वो बिलकुल बदल गई थी। हमेशा खुश रहने वाली, मस्ती करने वाली लड़की एकदम चुप हो गई थी, मुझसे नजरें चुराने लग गयी थी, मेरे सामने भी नहीं आती थी तब पहली बार मुझे उसके लिए बुरा लगा, और कुछ दिन बाद मुझ बेअक्ल को भी समझ आ गया कि मैं उसके लिए क्या फील करता हूँ और उसे अगले दिन ही प्रपोज कर दिया और उसने खुशी खुशी हाँ कह दिया। अब तो हमारी ऐंगेजमेंट भी हो गई है बस उसका एमबीए होते ही उसे एक अच्छी जॉब मिल जाए फिर हमारे माँ पापा हमारी शादी करवा देंगे........

कल रात तो सोचते सोचते कब नींद आई पता भी नहीं चला.... अब हो गया न लेट ओफ्फो ड्राइवर भी आ गया चलो जैसे तैसे तैयार तो हुआ, अब अ ॉफिस पहुंचता हूँ।

" गुड मॉर्निंग हर्षद सर.... तो कब आए आप? " यह इंस्पेक्टर अमन की आवाज़ थी। मैंने कहा " कल ही आया हूँ " कुछ देर हम दोनों कुछ केस पर चर्चा करने लगे। अभी हमें इस बारे में बात करते ज्यादा समय नहीं हुआ था इतने में एक लड़की का फोन आया वह बोली " यहाँ हाइवे पर कुछ है आप जल्दी आइए " मैं सोचने लगा आज ही तो आया हूँ आज ही यह आफत मिल गयी। जब हम हाइवे पर पहुंचे तो देखा जिस लड़की ने हमें फोन करके बुलाया था वह वहाँ थी ही नहीं। वहाँ रोड के एक तरफ गड्ढे में पानी भरा हुआ था और दूसरी तरफ झाड़ियां और कुछ छोटे बड़े पेड़ पौधे थे, आसपास एकदम सन्नाटा था। हम उन झाड़ियों में आगे बड़े ही थे कि वहाँ का नजारा देखकर मेरी आँखें फटी की फटी रह गई........उन झाड़ियों के बीच में एक लड़की की लाश मिली जिसका चेहरा पूरी तरह से बिगड़ा हुआ था, पहचानना मुश्किल था, पहनावे और कद काठी से वह

कोई 20-25 साल की लग रही थी। मैंने कॉन्स्टेबल रागिनी से कहा कि उस लड़की की लाश से कुछ आइ. डी. वगरह की तलाशी करे और इंस्पेक्टर अमन और कॉन्स्टेबल अर्जुन को आसपास जाकर देखने के लिए कहा। पर मैं खुद भी जानता था कि यह अंधेरे में तीर चलाने जैसा है क्योंकि वहाँ कुछ भी नहीं था न कोई इंसान, न कोई परिंदा, न कोई दुकान, न कोई मकान सब कुछ सुनसान..... रागिनी ने बताया उस लड़की के पास न कोई आइ. डी. प्रूफ था और न ही कोई फोन या पर्स।

अब हालात ऐसे थे कि उस लड़की के बारे में पता चलना नामुमकिन सा हो गया था। अभी मैं आसपास का जायजा कर ही रहा था कि अमन और अर्जुन आ गए, अमन ने कहा " सर सीसीटीवी तो दूर की बात है यहाँ तो कोई इंसान, घर, दूर दूर तक कुछ भी नहीं है। पता नहीं किसी ने इसका खून कर दिया है या फिर इसने खुदखुशी कर ली कुछ भी कहना मुश्किल है। सर मुझे तो लगता है इसने खुदखुशी ही करी है वरना अगर इसके साथ चोरी, लूटपाट या कुछ भी गलत हुआ होता तो इसके हाथ में यह महंगी घड़ी और उंगली में यह गोल्ड की रिंग न होती " एक पल के लिए मैं भी अमन की बात से सहमत हुआ पर अगले ही पल मैने कहा " नहीं अमन यह कोई आत्महत्या नहीं है यह एक मर्डर है " " सर आप ऐसा कैसे कह सकते हैं? " अर्जुन और रागिनी एकसाथ बोले। तब मैंने कहा " ऐसा इसलिए क्योंकि पहली बात तो यह कि कोई भी इंसान अपनी पहचान छुपाकर खुदखुशी क्यों करेगा? कोई तो आइ. डी. प्रूफ होता इसके पास। चलो मान लो इसने अपनी पहचान छिपाई इसका भी कोई करण हो। दूसरी बात कि अगर इस लड़की ने आत्महत्या की है तो देहरादून में मरने के लिए कई जगह हैं जैसे यह किसी पहाड़ी से कूद सकती थी, अपनी छत से कूद सकती थी, या फिर जहर खा सकती थी, फाँसी लगा सकती थी, जब ऐसे हजारों तरीके हैं मरने के तो कोई अपने चेहरा बिगाड़ के क्यों मरेगा? " अमन ज्यादा देर तक चुप नहीं रह पाता है और आखिर बोल ही पड़ा " सर यह भी तो हो सकता है कि यह किसी वाहन के सामने आ गई हो और टक्कर लगने से इसकी मौत हो गई और ड्राइवर डर कर भाग गया " एक बार फिर मैं अमन की बात से सहमत हुआ पर कुछ देर बाद मैंने आगे कहा " नहीं अमन अगर यह किसी वाहन के सामने आती तो क्या सिर्फ इसका चेहरा खराब होता वो भी इतनी बुरी तरह से..... नहीं बल्कि इसके चेहरे के साथ साथ बाकी शरीर पर भी चोट या घाव के निशान होते और आसपास कहीं न कहीं खून के निशान भी होते पर देखो पूरी सड़क साफ है और तो और जहाँ इसकी लाश है वहाँ पर भी खून का कोई निशान तक नहीं है.......आश्चर्य है। " "सर यह भी तो..... " अमन एक बार फिर चुप न रह सका और थक हार कर बिना सिर पैर की बातें करने वाला था पर इससे पहले वो बोलता, मैं समझ गया कि अब यह क्या कहने वाला है " प्लीज़ अमन अब यह मत बोलना कि इसने एक भारी पत्थर खुद उठाया और अपने आप अपने चेहरे पर मार लिया क्योंकि इसके लिए यह एक भारी पत्थर उठाती कैसे? और उठा भी लेती तो क्या इतने भारी पत्थर को अपने सिर के

ठीक ऊपर तक लेकर जा पाती? और ले भी जाती तो इसका सिर फूटता, चेहरा न बिगड़ता और अगर इसे अपना चेहरा ही बिगाड़ना था तो यह लेट कर पत्थर उठाती फिर अपने चेहरे पर मारती पर यह तो किसी भी हाल में संभव नहीं है। और सबसे बड़ी बात अगर इसने खुद यह सब किया भी है तो वह पत्थर कहाँ है जिससे इसका चेहरा बिगड़ा, कोई जानवर तो इतना भारी पत्थर लेकर जाने से रहा। "

अब तक हमें वहाँ पर तीन घंटे हो गए थे और हम चारों ने अपने अपने तरीके से कुछ न कुछ सुराग ढूँढने की कोशिश की पर सब बेकार रहा। अब हम सब बुरी तरह से परेशान हो चुके थे कि तभी रागिनी ने दूर, झाड़ियों के आगे इशारा करते हुए कहा " सर वो देखिए वहाँ कोई मकान है..... शायद कुछ पता चल सके " अब हमने अंधेरे में आखिरी तीर छोड़ा और चल दिए उस मकान की तरफ।

पूरे रास्ते में झाड़ियां और पेड़ पौधे थे, शायद उस तरफ कई सालों से कोई नहीं गया था। अमन और अर्जुन झाड़ियां हटाते जा रहे थे और मैं और रागिनी उनके पीछे चल रहे थे। पंद्रह मिनट में हम उस घर के सामने थे। अर्जुन सबसे आगे था और जैसे ही उसने उस मकान में पहला कदम रखा बाहर तेज आँधी आ गई और न जाने कहाँ से एक बड़ा काला पत्थर आकर उसके उसी पैर (जिस पैर से उसने घर में कदम रखा) पर गिर पड़ा और वह दर्द से चिल्लाने लगा, शायद उसके पैर में फ्रैक्चर हो गया था पर इतनी दूर आकर हम ऐसे ही वापस नहीं लौट सकते थे इसीलिए अर्जुन को वहीं बाहर बैठा दिया अब मैं सबसे आगे था और जैसे ही मैंने उस मकान में पहला कदम रखा...... हम सभी हतप्रभ रह गए..... आँधी अचानक से शांत हो गई थी जैसे वो मेरे अलावा किसी और को अंदर नहीं जाने देना चाहती थी। खैर....... हम तीनों अंदर गए तो देखा उस मकान में दरवाजे के ठीक सामने दो कमरे थे और बांए तरफ की दीवार लगभग टूट चुकी थी उसके बगल में एक मिट्टी का टूटा हुआ चूल्हा था और दांयी दीवार पर एक बड़ा काला गोला बना हुआ था और उसके ठीक नीचे एक काली कपड़े की गुड़िया थी जिसके चेहरे पर एक काला पत्थर रखा हुआ था। यह सब देखकर रागिनी चिल्लाने लगी " सर यह उसका निशान है, व.....वो..... वो है य..... यहीं कहीं....... वो अ.... आ जाएगी...... किसी को नहीं छोड़ेगी...... स....सर जल्दी चलिए....जल्दी चलिए " मैंने अमन को रागिनी के साथ छोड़ा और खुद पूरा मकान देखा कहीं कुछ नहीं मिला रागिनी अब तक चिल्लाए जा रही थी " सर चलिए " मैंने पूछा " क्या हुआ किसका निशान है रागिनी, कौन आ जाएगी? " रागिनी डर के मारे जोर से चिल्लाकर बोली " चुंडैल अब प्लीज़ चलिए सर " रागिनी के इतना कहते ही बाहर तूफान आ गया और अब मुझे भी उसकी बात सही लगने लगी तो सबकी सुरक्षा की खातिर मैंने वापस चलने के लिए कहा। अमन अर्जुन को

सहारा देकर चल रहा था और मैं रागिनी के साथ चल रहा था क्योंकि वो बहुत डरी हुई थी, पर सच तो यह है कि डर तो हम सब रहे थे। मैं मन ही मन सोचने लगा यार चोर, डकैत, आतंकियों से लड़ना तो समझ में आता है, पर अब क्या भूत चुड़ैलों से भी लड़ना पड़ेगा, क्या ये ही दिन देखना बचा था ? अबतक आँधी बहुत बढ़ गई थी और धूल की वजह से मैंने आँखें बंद कर ली पर जब चलने में दिक्कत आने लगी तो मजबूरन आँखें खोलनी पड़ी और जब सामने देखा तो लगा मैंने आँखें खोलकर जिंदगी की सबसे बड़ी गलती कर दी........ मेरे डर और आश्चर्य की कोई सीमा न रही, हर तरफ अंधेरा छा गया था, ऐसी बदबू आ रही थी लग रहा था जैसे कोई चिता जल रही हो इस अंधेरे में कुछ भी नहीं दिख रहा था सिवाय उन दो लाल आँखों के जो मुझे ही घूरे जा रही थीं। अब मेरी हालत ऐसी थी कि काटो तो खून नहीं, मेरे मुंह से आवाज निकलना तो दूर मेरी सांसे तक ठहर सी गई, मुझे अपने पैरों की सारी ताकत जाती सी लग रही थी, मेरे पूरे शरीर में सिहरन दौड़ गई......और जो रही सही हिम्मत थी वह भी उसके शब्दों को सुनकर, मेरा साथ छोड़ गई।उसने कहा मुझे याद रखना और इतना सुनते ही मैं बुरी तरह से काँपने लगा और उस घने अंधेरे में भी मेरी आँखों के आगे अंधेरा छा गया और मैं बेहोश हो गया।

मुझे होश आया तो देखा कि मैं हॉस्पीटल में हूँ और सामने अमन और रागिनी खड़े हुए हैं, मेरे बगल वाले बैड पर अर्जुन सोया हुआ है और उसके पैर पर प्लास्टर लगा हुआ है।

मैंने अमन से पूछा " अर्जुन ठीक है न? और मुझे क्या हो गया था और वो कहा गई? " तो अमन बोला " सर अर्जुन बिल्कुल ठीक है बस पैर में फ्रैक्चर हुआ है और सर आप अचानक से काँपने लगे और बेहोश हो गए तो हम आपको यहाँ ले आए और रागिनी यहीं तो खड़ी है और डेड बौडी हमने पोस्ट मॉर्टम के लिए भिजवा दी है। "

" अरे मैं उस लाल आँखों वाली की बात कर रहा हूँ, कहाँ गई वो? " मैंने खीजते हुए कहा।

" क्यों मजाक करते हैं सर भला लाल आँखें भी किसी की होती हैं? "

मैंने भी सोचा चलो ठीक है इन लोगों को मजाक लग रहा है वरना अगर इसे पता चल गया कि मैंने चुड़ैल देखी है तो यह पूरे आॅफिस में गा देगा इससे अच्छा तो यह है कि ये सब इसे मजाक ही समझें।

" वो रागिनी वहाँ चुड़ैल चुड़ैल कर रही थी तो मैंने सोचा मैं भी थोड़ा मजाक कर लूँ " मैंने बनावटी हँसी हँसते हुए कहा। पर शायद अमन और रागिनी इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं देना चाहते थे।

शाम तक मुझे हॉस्पीटल से डिस्चार्ज मिल गया तो मैं क्वार्टर के लिए निकला। रास्ते में रोड लाइट्स नहीं थी और एक बार फिर मेरी आँखें फटी की फटी रह गई। मेरी कार के ठीक सामने

वही दो लाल आँखें चमक रही थीं। मैंने ड्राइवर को तुरंत कार रोकने के लिए कहा। तभी फोन पर कॉल आ गया.... भैया का कॉल था। ड्राइवर बोला " क्या हुआ सर कार क्यों रुकवाई? " तो मैं चिल्लाकर बोला " तुम्हें दिखता नहीं क्या सामने? " तो वो थोड़ा सहम कर बोला " सर आगे तो कुछ भी नहीं है " तब मुझे समझ आया कि गलती मेरी है क्योंकि उस चुड़ैल को अभी तक सिर्फ मैं ही देख सकता था। मैंने कहा " मेरा मतलब तुम इतने अंधेरे में कार कैसे ड्राइव कर रहे हो " तो उसने भी हँसकर कहा " सर रोड पर लाइट नहीं है तो क्या हुआ कार में तो लाइट्स हैं " मैंने कहा ठीक है चलो अब।

इतनी देर में कॉल मिस्ड कॉल में तबदील हो चुका था तो मैंने भैया को कॉल बैक किया। "आज हो क्या गया है तुझे सुबह से दस बार कॉल कर चुके हैं हम लोग और तू है कि कॉल बैक करना तो दूर रिसीव भी नहीं कर रहा। कहाँ था सुबह से? यहाँ सबको चिंता में डाल देता है। कब बड़ा होगा तू? "भैया जब डाँटना शुरू करते हैं तो रुकते ही नहीं हैं। पर सच तो यह है कि मैं भैया की चिंता और उनकी प्यार भरी डाँट सुनकर दिन भर की घटनाएं भूल गया और बोला " कुछ नहीं हुआ भैया वो एक मर्डर केस के सिलसिले में काफी देर तक छान बीन कर रहे थे, तो इसलिए बात नहीं हो पाई और फोन भी कार में रह गया था। और आप सब मेरा इतना ध्यान रखते हैं तो मैं बड़ा कैसे हो पाउंगा " " शर्म कर थोड़ी बच्चा नहीं है तू जो कैसे बड़ा हो पाउंगा " भैया फिर डाँटने लगे पर मैं उनसे चुड़ैल वाली बात छिपा गया क्योंकि अभी तो मैं खुद ही उलझन में था कि क्या सच में कोई चुड़ैल मेरे पीछे पड़ गई है या यह सब मेरा वहम है तो उन्हें कुछ भी बता के परेशान करने का क्या फायदा। उनसे बात करते करते कब क्वार्टर आ गया पता ही नहीं चला।

क्वार्टर आते ही मैंने रामू काका से कहा " काका बहुत भूख लगी है जल्दी खाना बना दिजिए तब तक मैं अपने कमरे में हूँ " रामू काका " ठीक है " कहकर चले गए। और मैं चेंज करके अनन्या से व्हॉट्स ऐप पर चैट करने लगा। वह भी पूछने लगी दिन भर बात क्यों नहीं की? मैंने फिर वही जवाब दिया जो अब तक देता आ रहा था फोन कार में रह गया और मैं बहुत बिज़ी था केस के सिलसिले में।

अभी मुझे अनन्या से बात करते ज्यादा देर नहीं हुई थी कि रामू काका ने बुला लिया। उन्होने कहा "खाना तैयार है बैठो मैं लगा देता हूँ " उन्होने खाना लगाया और खुद भी वहीं बैठ गए। यूँ तो मैंने उन्हें कभी भी नौकर नहीं समझा पर वे खुद ही कभी मेरे बराबर में नहीं बैठते थे और आज यूँ उनका मेरे बराबर में बैठना मुझे कुछ समझ नहीं आया।

अभी मैंने पहला निवाला तोड़ा ही था कि वे बोले " हर्षद " उन्होने कभी भी मेरा नाम नहीं लिया हमेशा बेटा ही कहते थे और आज यूँ नाम ले रहे हैं, मैंने सोचा अपनेपन में ऐसे बोला होगा। " हर्षद " मैं अभी तक आश्चर्य में था। अब उन्होने तीसरी बार कहा " हर्षद " तो मैंने " हाँ " बोला।

उन्होने कहा " मुझे याद रखना "। अब जो निवाला मेरे हाथ में था वह फेंक कर मैं उनसे उल्टी तरफ भागा तो किसी से टकरा गया और सामने देखा तो हालत खराब हो गई सामने रामू काका थे। वे पूछने लगे " क्या हुआ बेटा सब ठीक है न भाग क्यों रहे हो? " मैंने पीछे देखा तो कोई भी नहीं था। मैं समझ नहीं पा रहा था ये रामू काका हैं या चुड़ैल। वे फिर बोले " खाना लगा दूँ क्या? " मैने कहा " रहने दीजिए काका भूख नहीं है, आप खा लीजिए " अब जिसको एक दिन में तीन तीन बार चुड़ैल के दर्शन हो जाएं उसे क्या खाना अच्छा लगेगा। पर मैं इतना तो समझ गया कि चुड़ैल दिखना मेरा कोई भ्रम नहीं है और यही असली रामू काका है पहले जिन रामू काका से मैं बात कर रहा था वो मुझे याद रखना वाली चुड़ैल थी जो रामू काका के वेष में मुझे न जाने क्या खिलाना चाहती थी।

मेरा मन बहुत खराब हो गया था तो कमरे में जाकर बैठ गया तभी मूझे याद आया माँ अक्सर कहती हैं कि कोई भी बुरी आत्मा तीन बार आवाज देती है और जब शक हो तो चौथी बार ही जवाब देना चाहिए। पर अब तो मैं तीसरी बार में ही हाँ बोल चुका था और माँ की बात याद आते ही मैं और डर गया पर अब कुछ नहीं हो सकता था।

यही सब सोच सोचकर दिमाग बहुत ज्यादा खराब हो गया तो सोचा यूट्यूब पर गाने ही सुन लूँ और मैं " सुन रहा है न तू " की वीडियो देखने लगा। अचानक से वीडियो में ऐक्टरैस की जगह एक लड़की आ गई जिसका उस साँग और फिल्म तो क्या, फिल्म इंडस्ट्री से भी शायद कोई नाता नहीं था। यह देखकर फोन फेंककर मैं दूर खड़ा हो गया और बाहर जाने की कोशिश करने लगा पर कोई फायदा नहीं....... दरवाजा खुल ही नहीं रहा था, तभी मेरा फोन हवा में तैरता हुआ मेरी आँखों के सामने आकर रुक गया, मैं कुछ नहीं देखना चाहता था पर आँखें बंद ही नहीं हो रही थी क्योंकि कहीं न कहीं मैं जानना चाहता था कि क्या कड़ी है जो एक चुड़ैल को मुझसे जोड़ रही है और मैंने देखा वही लड़की जो ऐक्टरैस की जगह दिख रही थी, एक पेड़ से बंधी हुई है और उसने पुराने जमाने के कपड़े पहन रखे हैं और उसके आस पास काले कपड़े की काफी सारी गुड़िया पड़ी हुई हैं। उसके सामने कुछ लोग खड़े हुए हैं जिनके चेहरे उसकी तरफ हैं और पीठ मेरी तरफ, उन सभी ने भी पुराने जमाने के कपड़े पहन रखे हैं और उनके हाथों में जलती हुई मशालें हैं, उनमें से एक आदमी आगे बढ़ता है और उस लड़की के ऊपर मशाल फेंक देता है और कुछ ही पलों में वह लड़की जल कर राख हो जाती है। इसके बाद मेरा फोन आॅफ होकर फर्श पर गिर जाता है।

अब मेरी हालत ऐसी थी कि कमरे में मैं रुक नहीं सकता था और बाहर मैं जा नहीं पा रहा था, दरवाजा अभी तक नहीं खुल रहा था। कल के सफर और आज की थकान के कारण कुछ देर बाद मैं करवट करके सो गया।

3 बज रहे थे जब दोबारा मेरी किस्मत मेरे साथ खेलने लगी। मुझे लगा जैसे कोई मेरे पीछे बैठा है, पर जब मैंने पीछे मुड़कर देखा तो कोई भी नहीं था। मैं दोबारा लेट गया और सोचने लगा आखिर मैंने इस चुड़ैल का क्या बिगाड़ा है जो यह हाथ धोकर मेरे पीछे पड़ गई है। इतने मे किसी के साँस लेने की आवाज आने लगी और मुझे लगा कि शायद मेरा आखिरी समय आ गया है फिर भी मैंने हिम्मत करके पीछे देखा तो इस बार भी कोई न दिखा पर साँस लेने की आवाज बराबर आ रही थी मैं फिर से करवट करके लेट गया मैंने सोचा आखिरी बार और देखूँ कोई है या नहीं और इस बार जो देखा तो देखता ही रह गया। वह बिलकुल मेरे बगल में बैठी थी और उससे चिता जलने जैसी बू आ रही थी, वह पूरी तरह से जली हुई थी और उसके बाल उसके चेहरे पर फैले हुए थे, उसकी लंबी जली हुई नाक से वो मुझे सूंघने लगी जैसे शेर अपने शिकार को सूंघता है और उसकी लाल आँखें उसके काले, बिखरे बालों में से मुझे ही घूर रही थीं। उसके जले हुए हाथों से खून रिस रहा था। इतना सब देखकर अब बस मुझे हार्ट अटैक आना ही बचा था। मैं उसकी तरफ देखकर सोच रहा था शायद इसे मुझ पर रहम आ जाए और यह मुझे छोड़ दे पर इसके उलट उसने तो अपने हाथ से सीधे मेरा गला ही पकड़ा लिया और कहा " जो तुमने किया है तुम्हें उसे याद करना ही होगा, तुम मुझे ऐसे नहीं भूल सकते, मुझे याद रखना मैं वापस आउंगी " इतना कहकर वो गायब हो गई। मैंने देखा जहाँ पर वो बैठी हुई थी उस जगह बहुत सारी राख पड़ी हुई है, मैंने उस राख को साफ किया पर इसके बाद मैं सारी रात सो नहीं पाया।

मैं सुबह जल्दी तैयार हो गया और ड्राइवर को भी जल्दी आने के लिए कह दिया क्योंकि रात भर उस चुड़ैल का डैमो देखने के बाद अब मुझमें इतनी हिम्मत नहीं थी कि मैं और कुछ देख सकूँ और इसीलिए मैं उस कमरे से, उस क्वार्टर से बाहर जाना चाहता था।

जल्दी ही मैं आॅफिस पहुंच गया और देखा कि आज अमन भी जल्दी आया हुआ है और उसने रोज की तरह आज भी मुझे गुड माॅर्निंग विश किया तो मैंने भी उसे बदले में गुड माॅर्निंग कहा।

" सर मुझे आपसे एक बात कहनी है " अमन ने कहा।

" हाँ कहो अमन क्या कहना है? " मैंने कहा तो वो बोला

" सर कल जो डेड बॉडी हमने पोस्ट मॉर्टम के लिए भेजी थी, उसकी पोस्ट मॉर्टम रिपोर्ट आ गई है और उसमें ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे हमें केस में कोई मदद मिल सके। सर इसकी मौत चोट लगने से ही हुई है।"

" ओके लीव इट, यह बताओ जो मैंने कहा था कि जिन लोगों ने किसी भी 20-30 साल की लड़की की गुमशुदगी की रिपोर्ट लिखवाई है उन्हें शिनाख़्त के लिए बुलाना तो आया क्या कोई? "

" सर शिनाख़्त के लिए तो किसी को तब बुलाते जब डेड बॉडी मुर्दाघर में होती "

" आर यू जोकिंग अमन "

" नहीं सर आइए आपको सीसीटीवी फुटेज दिखाता हूँ। " "कहाँ का......मुर्दाघर का? "

" जी सर आइए.......... यह देखिए "

" अमन हाउ इस इट पॉसिबल एक सेकंड पहले डेड बॉडी एकदम शांत रखी हुई है और अगले ही सेकंड यह हवा में उठ गई........और यह तो देखो ऐसा लग रहा है जैसे कोई अदृश्य शक्ति इसे खा रही थी.......ओह माय गॉड सिर्फ हड्डियाँ बची हैं। "

" सर हो न हो यह उसी चुड़ैल का काम है जिसके बारे में कल रागिनी बात कर रही थी। "

" अमन कानून सबूत माँगता है अंधविश्वास नहीं। समझ भी रहे हो तुम क्या बोल रहे हो हम अपने सीनियर्स को यह बोलेंगे कि एक चुड़ैल डेड बॉडी का खून पीती है और फिर उसे कच्चा खा जाती है "

" सर चुड़ैल तो है। " अमन के साथ साथ रागिनी ने भी अपनी सहमति देते हुए कहा।

" तो जब मैंने तुमसे उस लाल आँखों वाली के बारे में पूछा था तो तुम चुप क्यों थे तुम्हें पता भी है मैंने कितना भुगता है? " मैं अब अमन पर चिल्लाने लगा था क्या करता जितना मैंने सहा है इसके बाद कोई भी पागल हो जाए।

" सर उस वक्त आपकी तबियत ठीक नहीं थी इसलिए हमने आपसे कुछ ज्यादा नहीं कहा कि कहीं आपकी तबियत और खराब न हो जाए। "

इसके बाद शुरू से अब तक घटी सारी घटनाएं मैंने उन दोनों को बता दी और कहा" हाँ चुड़ैल है पर हम अपने सीनियर्स को क्या जवाब देंगे, अमन आज तक एक भी केस ऐसा नहीं है जो मैंने अधूरा छोड़ा हो। "

" सर इस वक्त बात हार या जीत की नहीं है, सर सबूत उसके खिलाफ मिलते हैं जो जिंदा हो न कि उसके खिलाफ जो मर चुका हो और सर इस वक्त जरूरी यह है कि हम सबकी जान बच सके। "

" अमन तुम्हें क्या लगता है मैं नहीं जानता कि चुड़ैल है पर हमने भुगता है इसलिए हम जानते हैं चुड़ैल है पर उन्होने कुछ नहीं देखा तो हम उन्हें कैसे यकीन दिलाएंगे।"

" सर इस वक्त जरूरी यह है कि हम किसी तांत्रिक या पुजारी से मिल लें जो हमें उस चुड़ैल से बचा सके कहीं अगला नंबर हम में से ही किसी का न हो। " रागिनी ने भी डरते डरते अपनी बात रखी।

" चुप करो तुम दोनों........मरने से नहीं डरता मैं पर यह सोचकर जरूर डर जाता हूँ कि मेरे बाद मेरे परिवार का क्या होगा......ठीक है चलते हैं किसी तांत्रिक या पुजारी के पास अब मुझे छुटकारा चाहिए इस सब से। "

अचानक से आॅफिस की लाइट्स जलने बुझने लगीं और आँधी के साथ साथ चिता जलने जैसी बू आने लगी, उस चुड़ैल का भयानक रूप देखकर किसी की बोलती बंद हो जाए, दिन में भी रात जैसा अंधेरा छा गया। उसने अपने बालों से एक घेरे जैसा कुछ बनाया और अमन और रागिनी की तरफ फेंक दिया। वे दोनों अपनी जगह से हिल भी नहीं पा रहे थे बस बुरी तरह चिल्लाए जा रहे थे शायद उस घेरे में उन्हें बहुत दर्द हो रहा था। अब वह चुड़ैल मेरे सामने आकर खड़ी हो गई और अपनी लाल आँखों से मुझे घूरते हुए बोली " तांत्रिक के पास जाएगा, पुजारी के पास जाएगा हाँ, मुझसे छुटकारा चाहिए.........नहीं नहीं नहीं नहीं नहीं मुझसे छुटकारा पाना इतना भी आसान नहीं है.....पुजारी तो क्या भगवान भी तुझे मुझसे नहीं बचा सकता जानता है क्यों.....क्योंकि तेरी किस्मत भगवान ने नहीं शैतान ने लिखी है.......जा जिस भी तांत्रिक, जिस भी पुजारी के पास जाना है जा, देखती हूँ तुझे मुझसे कौन बचा सकता है......भाग और बचा ले अपनी जान " कहकर वो जोर से हँसने लगी और मैं पागलों की तरह इधर उधर भागने लगा यह सोचकर कि शायद कोई मंदिर मिल जाए और मैं वहाँ पहुंच जाऊँ और बच जाऊँ मैं अपने कैबिन के दरवाजे तक पहुंचा ही था कि वह चुड़ैल मेरे सामने आकर खड़ी हो गई और उसने मेरा हाथ पकड़कर मुझे वापस अंदर फेंका दिया। मेरे हाथ में बहुत दर्द होने लगा और वह फिर मेरे सामने आई और मुझे फिर से उठाकर दीवार की तरफ फेंक दिया जिससे मेरे सिर से खून बहने लगा और खून की कुछ बूँदे जमीन पर गिर गई जिन्हें वह चुड़ैल चाटने लगी। पर शायद इस सब से भी उसे शांति नहीं मिली और उसने हवा में हाथ हिलाया जैसे किसी को बुला रही हो और फिर मेरे पैर की तरफ इशारा किया, उसके ऐसा करते ही कहीं से एक काली, नुकीली लकड़ी आकर मेरे पैर में चाकू की तरह धंस गई और मैं दर्द से चिल्लाने लगा।

" अब बता तू तांत्रिक या पुजारी के पास जाएगा या फिर औषधालय जाएगा......मुझे याद रखना, मैं वापस आउंगी और तेरी जान लेकर जाउंगी "

कहकर वह गायब हो गई और उसके जाते ही रागिनी और अमन उस घेरे से आजाद हो गए और वापस उजाला हो गया पर तब तक मेरी आँखों के आगे अंधेरा छा चुका था।

जब मुझे होश आया तो देखा मैं तीन दिन में तीसरी बार हॉस्पीटल में हूँ और हमेशा की तरह इस बार भी अमन और रागिनी मेरे पास खड़े हुए हैं।

" सर मुझे लगता है जरूर उस चुड़ैल का आपसे कोई न कोई कनैक्शन है नहीं तो वो बार बार आपको नुकसान नहीं पहुंचाती " अमन ने परेशान होकर कहा।

" सर आपके ठीक होने के बाद अगर आप चाहें तो मैं आपको एक पुजारी जी से मिलवा सकती हूँ.....बहुत से लोगों को भूत बाधा से छुड़ाया है उन्होने। " रागिनी ने कहा।

मैं हर बार यही सोचता कि आखिर ये दोनों मेरी इतनी चिंता क्यों करते हैं और आखिर पूछ ही लिया " मैं तो अभी यहाँ आया हूँ और तुम दोनों मेरी इतनी चिंता करते हो....क्यों? "

" सर आपको याद है एक बार बच्चो को भीख मांगने के लिए मजबूर करने बाले गिरोह से हम बच्चों को छुड़ाने गए थे और जब हमने सारे बच्चों को छुड़ा लिया था तो उसी गिरोह का एक आदमी मुझ पर गोली चलाने वाला था और आपने उसे देख लिया था तब आपने सामने आकर मुझे बचा लिया था और गोली आपके हाथ में लग गयी थी। सर जब इतने बड़े आॅफिसर होने के बाद भी आपने अपनी जान की परवाह न करते हुए मेरी जान बचाई थी तो मेरा भी तो फर्ज बनता है कि मैं अगर आपके लिए कुछ भी कर सकूँ तो उससे पीछे न हटूँ। "

मैंने सोचा अमन ने कितनी बड़ी बात इतनी आसानी से कह दी वरना आजकल कौन किसी का अच्छा किया हुआ याद रखता है।

" और सर मेरा तो कोई रीजन नहीं है पर इंसानियत के नाते मैं आपकी हर संभव मदद करना चाहती हूँ और मैं इस बारे में मेरा मतलब है भूत प्रेत चुड़ैलों के बारे में मैं थोड़ा बहुत जानती भी हूँ तो शायद आपकी कुछ मदद हो जाए। " रागिनी ने कहा।

मुझे अपनी अब तक की नौकरी में कभी भी इतने अच्छे सहकर्मी नहीं मिले। मैं बचपन से सोचता था कि काश मेरे छोटे बहन भाई होते पर अमन और रागिनी को देखकर लग रहा था जैसे भगवान ने इनके रूप में मुझे छोटे भाई बहन दे दिए। पर मैं उनका सीनियर हूँ यह सोचकर चुप रह गया

और बस हँसकर " थैंक्स अ लौट फ़ॉर हैल्पिंग मी " कहकर चुप हो गया। थोड़ी देर बाद मैंने कहा " बहुत देर हो गई तुम लोग घर जाओ मेरी फैमिली यहाँ नहीं है पर तुम्हारी फैमिलीज़ तो यही है न बहुत देर हो गई है अभी जाओ फिर आना। " बहुत मुश्किल से मैंने उन्हें वापस भेजा।

मैंने सोचा घर पर माँ पापा से बात कर लूँ तो मम्मी को कॉल किया तो पता चला कि पापा बाजार में हैं कुछ काम से।

" क्या बात है जब से देहरादून गया है बस दिन में एक बार ही फोन करता है, बाकी वक्त क्या करता रहता है? "

" माँ बताया था न वो एक मर्डर केस के सिलसिले में सारा दिन निकल जाता है और क्वार्टर आकर आप लोगों से बात करके बस सो ही जाता हूँ तो ऐसे ही सारा टाइम निकल जाता है। "

" क्वार्टर पर अकेले मन लग जाता है तेरा? "

माँ ने जेसे ही पूछा मैं सोचने लगा मैं आकेला कहाँ हूँ माँ वह चुड़ैल हर वक्त मेरे आस पास रहती है, उसकी लाल आँखें हर वक्त मुझे घूरती रहती हैं, अब तो हर वक्त मैं डर के साये में रहता हूँ पता नहीं कब कौन कह दे " मुझे याद रखना।" पर मैं आपको यह सब कैसे बताऊँ।

" क्या सोचने लगा हर्ष? " माँ ने पूछा।

अब उस चुड़ैल का ध्यान आते ही मेरा दिमाग खराब हो गया तो मैंने कहा " ठीक है माँ बाद में बात करता हूँ " और सोने की कोशिश करने लगा शायद यह दवाइयों का ही असर था कि मुझे जल्दी नींद आ गई।

इसी तरह हॉस्पीटल में रहते हुए मुझे पाँच दिन हो गए और इन दिनों में एक बार भी वह चुड़ैल नहीं आई, तो क्या उसे मुझपर दया आ गई या फिर उसने अपना इरादा बदल दिया। मैं कयास लगाने लगा वैसे भी मैं इसके अलावा और कर भी क्या सकता था। तभी मेरी नजर मेरे पास वाले मरीज की टेबल पर गई, उसकी टेबल पर हनुमान जी की मूर्ति रखी हुई थी। तब मुझे समझ आया कि क्यों वो चुड़ैल इतने दिनों से नहीं आई और अब मैंने सोच लिया मैं भी अपने पास हनुमान जी की एक तस्वीर हर वक्त रखा करूँगा। मैं अभी सोच ही रहा था कि इतने में डॉक्टर आ गए और उन्होने बताया अब मैं यहाँ से जा सकता हूँ, मैंने तुरन्त अपने ड्राइवर को बुलाया और वापस चल दिया उस क्वार्टर की ओर।

रास्ते में मैं सोचने लगा आखिर मैंने यह पुलिस डिपार्टमैंट जॉइन ही क्यों किया और कर भी लिया तो जरूरी था कि एस. पी. ही बनता, इंस्पेक्टर बन सकता था, सब इंस्पेक्टर बन सकता था कम से कम छोटा क्वार्टर तो मिलता और साथ में कुछ पड़ौसी पर यह तो क्वार्टर कम बंगला ज्यादा है और रामू काका बाहर वाले कमरे में रहते हैं, अब इतने बड़े बंगले में रात भर चुड़ैल घूमती फिरती है यह मैं किसी से कह भी नहीं सकता। कहूँ भी तो कैसे मेरे अलावा किसी ने कुछ भुगता भी तो नहीं है।

मुझे अचानक चुड़ैल की याद आते ही मंदिर की याद आ गई और मैंने ड्राइवर से कहा " महेश यहाँ आस पास कोई मंदिर है क्या? "

" जी सर यहीं आगे एक गली छोड़कर दूसरी गली में मुड़ते ही हनुमान जी का मंदिर है, पाँच मिनट लगेंगी। "

" ठीक है जल्दी चलो वहाँ। "

पर नहीं मेरी तो किस्मत ही खराब थी, दिन होते हुए भी रात जैसा अंधेरा छा गया, हर तरफ भयानक चीखें गूँजने लगीं और वह चुड़ैल हवा में उड़कर मेरी कार के बोनेट पर बैठ गई और बिना देर किए उसने काँच तोड़ दिया और एक झटके में ड्राइवर का सिर धड़ से अलग कर दिया, और फिर एक ही झटके में उसके खून की एक एक बूँद पी गई। इतना सब देखने के बाद मैं जड़ हो गया था, मैंने सोचा आज तो मेरा मरना तय है और अगर आज मरना ही है तो क्यों न बचने की आखिरी कोशिश कर लूँ। यह सोचकर मैंने मंदिर की तरफ भागना शुरू किया और अब मुझे मंदिर न सिर्फ दिख रहा था बल्कि मैं मंदिर से कुछ ही कदम की दूरी पर था पर एक बार फिर मेरी किस्मत मेरे साथ खेलने लगी और वह चुड़ैल मेरे सामने आकर खड़ी हो गई और उसने मुझे हवा में उछाल कर मंदिर की दूसरी दिशा में फेंक दिया और गायब हो गई, मेरे सिर के घाव से दोबारा खून बहने लगा, सड़क पर गिरने से मेरे हाथ पैर बुरी तरह छिल गए, पर मैंने हार नहीं मानी सोचा अगर मरना ही है तो क्यों न लड़ते हुए मरूँ न कि हारकर और एक बार फिर मैं मंदिर की तरफ भागा। इस बार मैं बस मंदिर से एक कदम की दूरी पर था पर तभी वो चुड़ैल फिर मेरे सामने आ गई, मुझे लगा जैसे यह मुझे भगा भगा के मारना चाहती है। इतने में उसने पिछली बार की तरह हवा में हाथ हिलाया जैसे किसी को बुला रही हो और इस बार दो काली, नुकीली लकड़ियां मेरे पैर में हो रहे घाव में धंस गई, मैं जैसे तैसे उठा और वो फिर मेरी तरफ लपकी पर इस बार मैंने सीधे मंदिर में छलाँग लगा दी।

जब मैंने आँखे खोली तो देखा मैं एक कमरे में हूँ, पूरा कमरा दीयों की रोशनी में जगमगा रहा है, मैं जमीन पर लेटा हुआ हूँ, मेरी चोटों पर कुछ भूरे रंग का लेप लगा हुआ है। मुझे इतनी चोटें लगी हुई थी कि मैं उठ भी नहीं पा रहा था, तभी सामने अंधेरे में से एक मानवाकृति दिखाई दी पर यह चुड़ैल नहीं थी और पास आने पर पता चला ये कोई महात्मा या पुजारी हैं। उन्होने नारंगी रंग का लिबास पहन रखा था, वे मेरे पास आए और बोले " मैं इस मंदिर का पुजारी हूँ, तुम्हें मंदिर में बेहोश देखा तो इस कमरे में ले आया, तुम्हारी चोटों पर लेप लगा दिया है, जल्दी ठीक हो जाओगे। "

" बाबा मैं अभी कहाँ हूँ? "

" यह कमरा मंदिर में ही बना हुआ है यहाँ हर साल इसी महीने में कई सिद्ध महात्मा आते हैं, उनके विश्राम के लिए यह कमरा बना है। पर यह बताओ तुम्हें इतनी चोटें कैसे लगीं, कौन हो तुम? "

" बाबा मैं पुलिस में हूँ, मेरा नाम हर्षद है, कुछ दिन पहले ही यहाँ तबादले पर आया हूँ। और यह सब चोटें...... बाबा एक चुड़ैल मेरे पीछे पड़ गई है, मेरा उससे दूर दूर तक कोई लेना देना नहीं है फिर भी पता नहीं क्यों वो मुझे मारना चाहती है, मुझे यहाँ वापस आए कुछ दिन ही हुए हैं पर इतने दिनों से वो हर रोज मुझे परेशान कर रही है, पहले मारती है फिर ठीक होने का इंतजार करती है, फिर मारती है, पता नहीं मैंने उसका क्या बिगाड़ा है। मेरी मदद करिए बाबा, मुझे उस चुड़ैल से बचा लीजिए। " कहकर मैं रोने लगा, मैं जिंदगी में पहली बार खुद को इतना हारा हुआ महसूस कर रहा था।

" बेटा मुझे उतनी सिद्धियाँ प्राप्त नहीं हैं, मैं तो एक छोटा सा पुजारी हूँ पर हाँ जो महात्मा यहाँ आते हैं वे तुम्हें जरूर उस चुड़ैल से बचा सकते हैं, जब तक वे यहाँ नहीं आते तुम यहाँ से कहीं दूर चले जाओ, मैं उनसे तुम्हारे लिए मदद माँगूगा और जब वे तुम्हें बुलाएं तब तुम वापस यहाँ आ जाना, मैं तुम्हें फोन करके बता दूँगा। "

" बाबा जब तक मेरी चोट ठीक नहीं हो जाती, क्या बस तब तक मैं यहाँ रुक सकता हूँ, बाबा अगर मैं मंदिर से बाहर निकल गया तो वो मुझे मार डालेगी, मुझे बस एक बार अपने परिवार से मिलना है, मुझे कैसे भी मेरे घर तक सही सलामत पहुंचा दीजिए बाबा। " मैं हाथ जोड़कर विनती करने लगा और पुजारी जी वहाँ से उठकर चले गए जब वे लौट कर आए तो देखा उनके हाथ में एक लाल धाग है। उस धागे को दिखाते हुए उन्होने कहा " बेटा यह हनुमान जी का पवित्र धागा है जिसको वर्षों तक सिद्ध करने के बाद एक महात्मा ने मुझे लोगों को भूत बाधा से बचाने के

लिए दिया था। आज से यह तुम्हारी रक्षा करेगा। " कहकर वह धागा उन्होने मेरे हाथ में बाँध दिया।

" अब तुम चाहो तो मंदिर से बाहर निकल सकते हो, अब वह चुड़ैल तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकती पर हाँ डरा सकती है तो तुम डरना मत क्योंकि इस धागे के होते वह तुम्हें छू भी नहीं पाएगी।पर बेटा एक बात याद रखना यह धागा तुम्हें उस चुड़ैल से बचा सकता है पर छुटकारा नहीं दिला सकता इसलिए जब मैं तुम्हें बुलाऊ तब तुम तुरन्त उन महात्माओं से मिलने आना। "

मैं अगली सुबह ही अपने क्वार्टर पहुंच गया और पैकिंग करने लगा, मुझे छुट्टियाँ मिल गई थी। मैंने अमन और रागिनी को अपने जाने की और महेश की मौत की खबर दी तो अमन ने कहा " सर हमें महेश की मौत के केस को एक ऐक्सीडेंटल डेथ करार करके बंद कर देना चाहिए क्योंकि उस लड़की की तरह महेश की हत्या के भी कोई सबूत नहीं मिलेंगे। "

" ठीक है अमन तुम केस बंद कर देना, मैं वापस आकर मिलता हूँ। "

मुझे देहरादून से हरिद्वार पहुंचते पहुंचते दोपहर का एक बज गया। मैं जैसे ही घर पर पहुंचा, मम्मी, पापा, भैया, भाभी सबने मुझे घेर लिया।

माँ ने कहा " क्या हो गया है तुझे इतना कमजोर कैसे हो गया तू? "

मैं सोचकर आया था कि घर पर सबको सब कुछ सच सच बता दूँगा पर आते ही मैं सबको परेशान नहीं करना चाहता था इसलिए माँ से कहा " माँ इतने दिन बहुत दौड़ भाग की तो बहुत थका रहा तभी तो छुट्टी लेकर आ गया यहाँ। "

भाभी ने कहा " हर्षद तुम्हें पता भी है मम्मी ने तुम्हारे लिए आज तुम्हारी पसंद का सारा खाना खुद बनाया है। "

मैं सच में कुछ वक्त के लिए अपनी सारी परेशानियां भूल गया था। इतने में ही किसी ने मेरा कान मरोड़ दिया, मुझे लगा चुड़ैल यहाँ भी आ गई और जब मुड़कर देखा तो भैया थे, मुझे हंसी आ गई।

" कहाँ गए थे आप दोनों मैं आ गया तो मुझसे मिले भी नहीं? " मैंने भैया और पापा से मजाक करते हुए कहा।

भैया ने डाँटना शुरू कर दिया " क्या हाल कर रखा है अपना, तू तो इतना बड़ा भुक्कड़ है तो डाइटिंग करने लगा क्या, अनन्या से कॉम्पिटिशन कर रहा है क्या? "

पर पापा मेरे बेस्ट फ्रैंड है, हमेशा की तरह समझ गए मैं किसी परेशानी में हूँ तो उन्होने सब से कह दिया " देखो अभी तो आया है पहले इसे खाना खिलाओ तब आराम से बात करना। "

इसी तरह सबसे बात करते करते रात हो गई और सब अपने अपने कमरे में सोने चले गए। और मैंने सोचा कल सुबह सबको बता दूँगा कि एक चुड़ैल मेरे पीछे पड़ी हुई है और मेरी जान लेना चाहती है।

अगली सुबह मैं जल्दी उठ गया और सोचा अब सबको बता देता हूँ पर सुबह ही भैया ने कह दिया " आज मेरे साथ बाजार चलना " बाजार से लौटते हुए ही अनन्या ने मिलने बुला लिया। सारा दिन ऐसे ही निकल गया फिर सोचा कल सुबह बताउंगा। पर अगले सात दिन तक घर में सब इतने खुश थे कि मैं किसी से इतनी बड़ी बात कहने की हिम्मत नहीं जुटा पाया।

आठवें दिन मैंने सुबह ही सबको बुला कर कहा " मुझे आप सबको एक बात बतानी है? " पर तभी अनन्या की मम्मी का फोन आ गया।

" हर्षद जल्दी से घर आओ पता नहीं अनन्या को क्या हो गया है, अजीब सी बातें कर रही है, कभी रो रही है, कभी चिल्ला रही है। "

" ठीक है आंटी मैं आता हूँ " मैं जाने लगा तो पापा मम्मी भी साथ चलने के लिए कहने लगे पर एक बार फिर मुझे " तीन अशुभ होता है " माँ की बात याद आ गई और मैंने भैया को भी साथ चलने के लिए कहा।

हम जैसे ही अनन्या के घर पहुंचे हम सबको बहुत बड़ा झटका लगा.........उसके घर में दाखिल होते ही चिता जलने जैसी बू आने लगी, अनन्या अपने हाथ पैरों पर चल रही थी..... किसी जानवर की तरह, उसके बाल उसके चेहरे पर फैले हुए थे, उसकी आँखें लाल पड़ चुकी थीं और वह बस चिल्लती जा रही थी।

मुझे देखते ही वह मेरे सामने आकर खड़ी हो गई और बोली " सबको बताना चाहता था मैं तेरे पीछे पड़ गई हूँ धागे से तूने खुद को तो बचा लिया पर अपने परिवार को कैसे बचाएगा.......अब देख मैं केसे तेरी सजा इन सबको देती हूँ.......और तुम सब मुझे याद रखना "

मैंने तुरन्त अनन्या को पकड़ लिया और वह चिल्लाते हुए बेहोश हो गई पर मैं समझ गया यह चुड़ैल थी जो अनन्या पर हावी हो गई थी और जब मैंने अनन्या को पकड़ा तो अभिमंत्रित धागे की शक्तियों के कारण चुड़ैल चली गई।

जब अनन्या होश में आई तो सबका ध्यान मुझ पर गया कि अनन्या मुझसे ऐसे क्यों बात कर रही थी।

" य.. य... यह सब क्या है ?" अनन्या की मम्मी रोते हुए बोली। तब मैंने अनन्या, अपने और उसके पापा मम्मी और अपने भैया को सब कुछ बता दिया......उसकी लाल आँखें, एक लड़की को जलाते लोग, मेरा तीन दिन में तीन बार हॉस्पीटल जाना, महेश की मौत, मेरा पुजारी जी से मिलना, उनका मुझे धागा देना, मैंने उन्हें शुरू से लेकर अब तक की हर बात, सब कुछ बता दिया।

यह सब सुनकर सब परेशान हो गए माँ और अनन्या बस रोए जा रही थी पापा बोले " तो अब कैसे छुटकारा मिले उस चुड़ैल से? "

" अब तो जब पुजारी जी उन महात्माओं से बात करेंगे तभी कुछ हो सकता है पर तब तक हम सभी को अपना ध्यान रखना होगा। " मैंने माँ के आँसू पोंछते हुए कहा।

मेरी सारी बातें सुनकर अनन्या ने कहा " हर्षद....चाहे जो हो जाए तुम कभी यह धागा मत उतारना......वो हमें तो शायद छोड़ भी दे पर तुम्हें किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ेगी। "

तभी मेरे फोन पर कॉल आया, मेरे दोस्त अजय का जो मेरे घर के सामने रहता है " हर्षद जल्दी घर आ तेरे घर से अजीब सी आवाजें आ रही हैं। " मैंने कहा " हाँ मैं आता हूँ"

तभी मूझे याद आया भाभी घर पर अकेली हैं, तो क्या चुड़ैल ने अब भाभी पर कब्जा कर लिया है?

हम सभी घर पहुंचकर दरवाजा खटखटाने लगे, पर भाभी ने दरवाजा नहीं खोला। मजबूरन मुझे और भैया को दरवाजा तोड़ना पड़ा, और फिर वही चिता जलने जैसी बू आने लगी.......... वहाँ जो दृश्य हमने देखा, हम सभी की आँखें फटी की फटी रह गयीं........ भाभी पंखे पर बैठी हुई थीं और हम सबको देखकर वे नीचे आकर चिल्लाने लगीं और अनन्या की तरह वे भी किसी जानवर की तरह अपने हाथ पैरों पर चलने लगीं और एकदम से अनन्या को धक्का दे दिया, मैंने उसे खड़ा किया, इतने में भाभी के अंदर वह चुड़ैल उनका सिर दीवार से मारने लगी, जब भैया उन्हें रोकने लगे तो उस चुड़ैल ने भैया को भी हवा में उछाल दिया और अपने बालों से एक घेरे जैसा कुछ बनाया और मम्मी पापा अनन्या और उसके मम्मी पापा की तरफ फेंक दिया जिससे वे पांचों एक

घेरे में बंद हो गए और चीखने लगे। भैया सीढ़ियों के पास गिरे हुए थे और चुड़ैल ने वापस भाभी पर कब्जा कर लिया और भाभी अपना सिर दीवार से मारने लगीं और उनके अंदर से वह चुड़ैल घुर्राते हुए बोली " बोल अब भी अपना यह धागा नहीं उतारेगा या फिर मार दूँ इसे और तू एक एक कर के इन सबको मरता देख "

मैं भैया की आँखों में भाभी को खोने का डर साफ साफ देख सकता था। भैया भाभी ने हमेशा से मेरे लिए बहुत कुछ किया है और मैं उनको इस तरह नहीं देख पा रहा था। मैंने एक नजर माँ, पापा, भैया, अनन्या और भाभी को देखा और अपने हाथ में पहना हुआ धागा भाभी के हाथ पर बाँध दिया, भाभी बेहोश हो गई।

चुड़ैल ने भाभी को छोड़ दिया था और मेरे सिर के कुछ बाल तोड़ लिए और अपने हाथ से इशारा किया और एक काले कपड़े के पुतला उसके हाथ में आ गया। उसने उस पुतले के ऊपर मेरे बाल रखे और गायब हो गई।

उसके जाते ही अनन्या, माँ पापा और उसके माँ पापा उस घेरे से बाहर निकल आये।

भैया ने भाभी को कमरे में छोड़ा और हम सब एक साथ बैठ गए, डर के मारे किसी से कुछ बोला भी नहीं जा रहा था बस सब एक दूसरे को देख रहे थे कि शायद कोई इस चुप्पी को तोड़े।

अचानक से मेरेे फोन पर कॉल आया.....पुजारी जी का फोन था..... मैंने रिसीव किया तो वो बोले " बेटा मैंने महात्मा जी से तुम्हारे बारे में बात कर ली है उन्होने कहा है कि जितने भी लोगों को उस चुड़ैल ने देखा है, सब जल्द से जल्द आ जाओ। " " ठीक है पुजारी जी मैं सबके साथ आता हूँ। "

मैंने फोन रखा और सबको बता दिया कि " हम सबको आज ही देहरादून के लिए निकलना होगा। "

मैंने इतना कहा ही था कि मेरे हाथ में बहुत तेज दर्द हुआ और खून निकलने लगा जैसे किसी ने कील चुभा दी हो। सब मुझे ऐसे देखकर डर गए और भैया मेरे पास हनुमान जी की एक तस्वीर लेकर बैठे रहे और बाकी सभी लोग चलने की तैयारी करने लगे।

हम सब रात के आठ बजे तक मेरे क्वार्टर पर पहुंच गए सुबह से अब तक हम मैं इतने परेशान हो गया कि सोचा बस पाँच मिनट आराम कर लूँ फिर महात्मा जी के पास जाउंगा। पर मुझे नींद आ गई और जब मैं जागा तो हर तरफ अंधेरा था, चिता जलने की बदबू आ रही थी और जैसे ही अपने बायी तरफ देखा, होश उड़ गए, वह चुड़ैल पुजारी जी का सिर पकड़े हुए थी और उसके चेहरे पर खून लगा हुआ था। उसने वह कटा हुआ सिर मेरे ऊपर फेंक दिया और बोली " हम मंदिर के अंदर नहीं जा सकते तो क्या हुआ हम उस पुजारी को छल से बाहर तो बुला सकते हैं न...... देख तेरी मदद करने वाला मर चुका है......तू महात्मा के पास जाना चाहता है न, हम तुझे इतनी आसानी से नहीं जाने देंगे, तू हमारा गुनाहगार है, तूने हमारा खून किया है...... हम अपने कातिल को ऐसे ही नहीं छोड़ देंगे..... हम तुझे तड़पा तड़पा कर मारेंगे "

आज मेरे पैरों तले जमीन खिसक गई, यह क्या कह रही है, मैंने तो कभी किसी भी एन्काउंटर में किसी औरत को नहीं मारा है तो मैंने इसे कब मार दिया।

मैं अभी सोच ही रहा था कि उसने उस काले पुतले का हाथ मोड़ दिया और मुझे लगा जैसे किसी ने मेरा हाथ मोड़ दिया है। वो अब उस पुतले का गला पकड़कर मोड़ने ही वाली थी कि तभी भैया कमरे में आए और मुट्ठी भर मंदिर की रोली उसके ऊपर फेंक दी और वह चीखती चिल्लाती पुतला लेकर गायब हो गई और भैया और सभी लोग मुझे लेकर मंदिर चल दिए जहाँ महात्मा जी हमारा इंतजार कर रहे थे।

भैया ड्राइव कर रहे थे और मैं उनके साथ आगे बैठा हुआ था और माँ पापा और भाभी पीछे बैठे हुए थे, तभी फिर से चिता जलने जैसी बदबू आने लगी और मैंने सबसे पहले भाभी को देखा पर उनके हाथ पर तो हनुमान जी का पवित्र धागा बंधा हुआ था यह देखकर मुझे कुछ शांति आई कि चलो सब सेफ हैं, पर मैं गलत था जैसे ही मेरा ध्यान माँ पर गया मुझे बहुत बड़ा झटका लगा माँ की आँखें लाल हो गई थी और उन्होने पीछे से मेरा गला पकड़ लिया और बोली " मैं तुझे नहीं छोड़ूँगी तूने मेरी जान ली है " मैंने बहुत हिम्मत जुटाकर कहा " मैंने तुम्हें नहीं मारा तुम्हें जानना तो दूर मैं तो तुम्हारा नाम तक नहीं जानता तो मैं तुम्हें कैसे मार सकता हूँ? " तभी वह चिल्लाकर बोली " तेरा आज नहीं तेरा कल जुड़ा है हमसे, यह राज है अतीत का, तूने ही हमारी जान ली है हम तुझे नहीं छोडेंगे " तभी भैया का ध्यान भटक गया और हम बाल बाल बचे, भाभी ने अपने हाथ का धागा माँ के हाथ में बाँध दिया, माँ बेहोश हो गई और वह चुड़ैल चीखते हुए गायब हो गई।

कुछ देर बाद भैया से स्टीयरिंग छूट गया और उनकी आँखें लाल होने लगी, गाड़ी में चिता जलने की बदबू भर गई, पर इस बार भाभी ने एक पल की भी देरी किए बिना वह अभिमंत्रित धागा भैया के हाथ पर बाँध दिया और एक बार फिर हम सभी बाल बाल बचे पर शुक्र है कि अनन्या और

उसकी फैमिली जिस कार में आ रही थी उसमें चुड़ैल ने कुछ नहीं किया, इसी तरह हम लोगों ने क्वार्टर से मंदिर तक का पंद्रह मिनट का सफर एक घंटे में तय किया और आखिर हम मंदिर पहुंच गये।

महात्मा जी मेरा ही इंतजार कर रहे थे। उन्होने कहा " आओ हर्षद हम तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहे थे। "

हम सभी ने उन्हें प्रणाम किया।

महात्मा जी - उससे छुटकारा पाना चाहते हैं आप सब, पर उसके बारे में क्या जानते हैं आप?

मैं - कुछ भी नहीं बाबा वह बस इतना ही कहती है मुझे याद रखना और फिर गायब हो जाती है। आज उसने मुझसे कहा कि मैंने उसकी जान ली है और जब मैंने उससे कहा कि मैंने उसे नहीं मारा तो वह बोली मेरा कल उससे जुड़ा हुआ है ।

महात्मा जी - उससे छुटकारा पाने के लिए पहले हमें उसके बारे में सब कुछ पता करना होगा तुम्हारे अतीत में जाकर।

मैं - पर बाबा अगर मैंने उसकी जान ली है तो मेरा मर जाना ही ठीक है क्योंकि जब मेरी वजह से उसकी जान गयी है तो मुझे भी जीने का कोई हक नहीं है।

मैंने कहा ही था कि अनन्या चिल्ला पड़ी " तुम पागल हो गए हो हर्षद? "

माहत्मा जी - शांत हो जाओ बेटी हम कुछ भी अनिष्ट नहीं होने देंगे। अगर इससे सच में किसी की जान लेने का महापाप हुआ है तो महाकाल स्वयं इसका काल बन जाएंगे और यदि वह चुड़ैल झूठ बोल रही है तो वह ईश्वर के तेज मात्र से ही भस्म हो जाएगी।

बेटा तुम बातों की गहराई समझ नहीं रहे हो यदि उस चुड़ैल को तुमसे कोई बैर होगा तब वह तुम्हें झूठ बोलकर भी तो मार सकती है, हमें धैर्य से काम लेना होगा वरना यह गुत्थी सुलझने की जगह और उलझ जाएगी।

बाबा ने बहुत धीरज से सबको समझा दिया।

मैं - जी बाबा जैसा आप कहें।

महात्मा जी ने एक कागज पर कुछ लिखा और अपने शिष्य राघव को देते हुए कहा " यह सामान जल्द से जल्द लेकर आओ। "

महात्मा जी - हर्षद तुम मुझे उस चुड़ैल से मिलने से लेकर आज तक की हर बात बताओ।

मैंने बाबा को शुरू से अब तक की एक एक बात बता दी।

महात्मा जी - बेटा पहले हमें एक यज्ञ करना होगा जिसमें तुम आहूति दोगे और उसी से उस चुड़ैल का सच पता चल पाएगा।

मैं - ठीक है बाबा आप जो कहेंगे मैं सब करने के लिए तैयार हूँ बस हम सबका उस चुड़ैल से पीछा छुड़वा दीजिए।

महात्मा जी - हमें यह यज्ञ रात के तीसरे पहर में करना होगा, तब तक आप सभी यहीं मंदिर में बैठकर आराम कर लीजिए, ध्यान रहे चाहे कुछ भी हो जाए कोई मंदिर से बाहर नहीं निकलेगा।

हम सभी मंदिर में ही आराम करने लगे और मैं तो सो ही गया इतने वक्त से चिंता ने घेर रखा था, नींद तो आती ही। कुछ घंटों बाद हम सब जाग गए और यज्ञ के लिए तैयार होकर बाबा के पास पहुंचे।

वहाँ बाबा पहले से ही मौजूद थे, वे एक बड़े से हवन कुंड के सामने बैठे थे और राघव उनके पीछे कुछ नारियल, हवन सामग्री, कपूर, घी, पेन और कागज आदि लेकर बैठा हुआ था।

महात्मा जी - आप सभी लोग दाँई तरफ बैठ जाइये क्योंकि इस यज्ञ में सिर्फ हर्षद ही आहूति देगा और इस हवन के दौरान किसी को कुछ भी नहीं बोलना है, अन्यथा हमें यही यज्ञ दोबारा से करना होगा।

बाबा ने सबको समझाते हुए कहा।

बाबा ने आँखें बंद करके हवन करना शुरू किया और मैं आहूति देने लगा, पूरे मंदिर में हवन की आवाज गूँजने लगी। कुछ देर बाद बाबा ने राघव की तरफ हाथ बढ़ाया तो उसने उन्हें नारियल पकड़ा दिया, उस नारियल को पहले उन्होने मेरे सिर से लगाया, फिर अपने सिर से लगाने के बाद हवन की अग्नि में डाल दिया। उन्होने फिर से राघव की तरफ हाथ बढ़ाया तो उसने उन्हें कागज और पेन दिया और वे आँखें बंद करे हुए ही कागज पर कुछ लिखने लगे। लिखने के बाद उन्होने आँखें खोल दीं।

महात्मा जी - हर्षद तुम्हारा इस पन्ने पर लिखे हर एक शब्द से एक नाता है पर पहले तुम हमे बताओ क्या तुम इनमें से किसी भी शब्द से खुद को जुड़ा हुआ महसूस करते हो।

बाबा ने मुझे वह कागज देते हुए कहा।

मैंने देखा उस काजग पर 10 शब्द लिखे हुए थे।

पंद्रहवीं शताब्दी

हारांगुल

काला जादू

डायन

विश्वास राव

धारा

आग

बदला

चुड़ैल

आत्मा

यह सब पढ़कर मैं कुछ असमंजस में पड़ गया क्योंकि यह शब्द तो लगभग सभी लोग अपनी जिंदगी में एक दो बार तो सुन ही चुके होते हैं।

मैं - बाबा यह शब्द तो लगभग सभी अपनी जिंदगी में एक बार तो सुन ही चुके होते हैं फर इन सब से मेरा क्या नाता?

महात्मा जी - इन शब्दों से अपना नाता जानने के लिए पहले तुम्हें इन शब्दों के पूर्ण अर्थ को जानना होगा। तो बताओ क्या जानते हो तुम इन शब्दों के बारे में?

मैं - बाबा, पंद्रहवीं शताब्दी, विश्वास राव, धारा और हारांगुल के बारे में मैं कुछ नहीं जानता। काले जादू के बारे में भी मैं कुछ नहीं जानता बस इतना जानता हूँ कि यह बहुत खतरनाक होता है। डायन, चुड़ैल, आत्मा यह सब तो भूत होते हैं बस और इससे ज्यादा मैं कुछ नहीं जानता।

मेरा जवाब सुनकर बाबा हँसने लगे और बोले " बेटा तुम इस सब के बारे में कुछ नहीं जानते, हम समझाते हैं । "

हम सभी उनकी बात ध्यान से सुनने लगे।

महात्मा जी - बेटा सबसे पहले हम तुम्हें काले जादू के बारे में बताते हैं। वैसे देखा जाए तो इसे काला जादू कहना भी गलत है, यह तो तंत्र की एक विद्या है, भगवान शिव का अपने भक्तों को दिया हुआ एक वरदान है। तंत्र विज्ञान के नजरिए से देखा जाए तो यह एक बहुत ही दुर्लभ प्रक्रिया है जिसे विशेष परिस्थितियों में ही अंजाम दिया जाता है। इसे करने के लिए बहुत ही ऊँचे स्तर की विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है। प्राचीन काल में इसे सिर्फ अच्छे कामों के लिए इस्तेमाल किया जाता था। इसमें गेहूँ, उड़द और बेसन जैसी खाने की वस्तुओं से बनी मूर्ती को व्यक्ति के बाल लगाकर जागृत किया जाता था और उस रोगी के शरीर के प्रभावित हिस्से में सुइयां गड़ाकर सकारात्मक ऊर्जा भेजी जाती थी और रोगी ठीक हो जाता था। यही कारण है कि इसे रेकी और एक्यूप्रेशर का मिश्रण भी कहा जाता है। इस विद्या में अपनी आध्यात्मिक शक्ति से किसी को जीवन भी दिया जा सकता है।

मैं - तो फिर लोग इसे अपने स्वार्थ के लिए, गलत कामों के लिए इस्तेमाल कैसे कर लेते हैं?

महात्मा जी - कुछ स्वार्थी लोगों ने इस प्राचीन विद्या को समाज के सामने गलत रूप में प्रयोग करना शुरू कर दिया। जिस तरह से तंत्र की इस विद्या से सकारात्मक ऊर्जा से दूर बैठे व्यक्ति को ठीक किया जाता है उसी तरह इस विद्या से नकारात्मक ऊर्जा से किसी को हानि भी पहुंचाई जा सकती है, जिस तरह इस विद्या से किसी को जीवन दिया जा सकता है उसी तरह इस विद्या से किसी का जीवन लिया भी जा सकता है। काला जादू ऊर्जा का एक समूह या झुंड है।इसे हम विज्ञान के लॉ आॅफ कंज़र्वेशन आॅफ ऐनर्जी से समझ सकते हैं मतलब कि ऊर्जा को न ही बनाया जा सकता है और न ही मिटाया जा सकता है, बस इसके स्वरूप को एक से दूसरे में बदला जा सकता है। सनातन धर्म का अथर्ववेद सिर्फ सकारात्मक और नकारात्मक चीजों के लिए ऊर्जाओं के इस्तेमाल को समर्पित है। कुछ बुरे लोगों ने इस अच्छी विद्या का दुरुपयोग किया और तभी से इस विद्या को काला जादू कहने कहने लगे।

मैं - इसे वुडू भी कहते हैं न शायद? मुझे लगा यह मेरे ऐसा कहने से शायद बाबा समझें कि मुझे भी थोड़ी समझ है।

महात्मा जी - नहीं काले जादू और वुडू में बहुत सी समानताएं हैं परन्तु यह एक नहीं है। काला जादू तो कई सदियों से इस पृथ्वी पर है पहले एक अच्छी तंत्र विद्या के रूप में फिर काले जादू के रूप में।

वुडू तो अफ्रीका में सन् 1847 में अस्तित्व में आया। माना जाता है कि एरजूली डेंटर नाम की वुडू देवी एक पेड़ पर अवतरित हुई थी जिसे सुंदरता और प्रेम की देवी मानते हैं। उसने अपने जादू यानि कि वुडू से वहाँ के काफी सारे लोगों की बीमारियां दूर की थी। एक कैथोलिक पादरी को यह सब पसंद नहीं आया तो उसने इस विद्या को बुरा साबित करके उस पेड़ को कटवा दिया, स्थानीय लोगों ने वहाँ देवी की मूर्ति बनाई और पूजा करने लगे पर जैसे काले जादू का गलत इस्तेमाल हुआ, उसी तरह वुडू का भी गलत इस्तेमाल हुआ और लोग इन दोनों तरह के जादुओं से डरने लगे।

मैं - पर बाबा लोगों ने इसका गलत उपयोग कैसे कर लिया और जब यह दोनों जादू ही भगवान की देन हैं तब तो इसका गलत उपयोग असंभव था, फिर ऐसा कैसे हुआ?

मैं चौंक गया था यह जानकार कि कोई भगवान की देन का भी दुरुपयोग कर सकता है। महात्मा जी ने राघव से तीन गिलास पानी के मंगाए और एक गिलास से पानी पिया।

फिर उन्होने पास ही रखे काँच के टुकड़े एक गिलास के पानी में मिला दिए ।

महात्मा जी - बताओ हर्षद तुम किस गिलास का पानी पी सकते हो?

मैं - पहले वाले का।

मुझे बाबा की बात पर कुछ गुस्सा आ गया क्योंकि मेरा सवाल कुछ और था और उन्होने जवाब देने की जगह एक नया सवाल दाग दिया था।

महात्मा जी - नहीं बेटे, तुम पानी तो दोनों ही गिलास का पी सकते हो परन्तु इसका फल अलग अलग होगा। यदि तुम पहले गिलास का पानी पियोगे तो तुम्हारी प्यास बुझेगी और शांति मिलेगी पर यदि तुम दूसरे गिलास का पानी पियोगे तो इसमें पड़े काँच के टुकड़ों से तुम्हारे मुंह में घाव हो जाएंगे और तुम अधिक परेशान हो जाओगे।

ठीक उसी तरह भगवान की अलग अलग तरह से आराधना करने के फल भी अलग अलग होते हैं।

बाबा ने बहुत अच्छी तरह से अपनी बात हम सबको समझा दी। तभी भाभी बोलीं "बाबा मुझे किसी के रोने की आवाज आ रही है, कहीं कोई मुसीबत में तो नहीं " तब बाबा ने कहा " नहीं बेटी अब अगर प्रलय भी आ जाए तो भी हमें यहाँ से कहीं नहीं जाना है वरना वह चुड़ैल किसी को भी जीवित नहीं छोड़ेगी "

मैं - बाबा इसमे ऐसा प्रयोग करते हैं जो यह इतना भयानक हो जाता है?

महात्मा जी - इसमें कई तरह की चीजें प्रयोग की जाती हैं।

काले जादू में बहुत चीजें काम आती हैं जैसे लोहे की आलपिन, लाल व हरी मिर्च, नीबू, सरसों, तिल, तेल, मुर्गे और गेहूँ, उड़द और बेसन जैसी खाने की वस्तुओं से बनी मूर्ती आदि।

वहीं वुडू में काले कपड़े की गुड़िया या पुतला और तेंदुआ, मगरमच्छ, बंदर, ऊँट, लंगूर, बकरी आदि के अंग मुख्य रुप से काम में लिए जाते हैं।

मैं - पर बाबा इस सब में मैं कैसे शामिल हुआ पंद्रहवीं शताब्दी में तो मेरा कोई नामोनिशान तक नहीं था फिर वह चुड़ैल मेरे पीछे क्यों पड़ी हुई है?

महात्मा जी - काले जादू की सबसे क्लिष्ट प्रक्रिया है डायन बनना या बनाना।

तुम हारांगुल के बारे में नहीं जानते न, हारांगुल लातूर जिले में एक छोटा सा गाँव है जहाँ पर पहली बार डायन प्रथा शुरू हुई थी।

हारांगुल में ईरावती नाम की एक औरत थी जो हर रोज काला जादू करती, तंत्र क्रियाएं करती और रात को मुर्गे का खून पीती, पाँच सालों तक यही सब चलता रहा। एक दिन उसी गाँव का एक युवक रात को कहीं से लौटकर गाँव आ रहा था और तभी उसके सामने ईरावती आ गई और अपनी शक्तियों से उसे हवा में उछाल कर एक पेड़ पर लटका दिया फिर उसके सामने आकर उसके खून की एक एक बूँद पी गई और उसके शरीर से पूरा माँस खा लिया, अब उस युवक की सिर्फ हड्डियाँ ही बची थीं। उसके कंकाल को लेकर वह तीन दिनों तक कोई तंत्र क्रिया करती रही, न अपने झोंपड़े से बाहर निकलती न किसी को दिखती। जब तीन दिनों बाद वह अपनी झोंपड़ी से बाहर निकली तो वह पूरी तरह से एक डायन बन चुकी थी। डायनों की एक और बात होती है, वे

जिस जिस को अपने माया जाल में फंसाती हैं उन सबकी उम्र खा लेती है और खुद जवान बनी रहती हैं। ईरावती ने भी गाँव के भोले भाले किशोरों को, युवकों को अपने माया जाल में फंसा लिया और उनकी उम्र खाने लगी।

गाँव में हो रही इन रहस्यमय मौतों के कारण लोग हर वक्त गुट बनाकर रहने लगे। कोई भी कभी भी किसी भी काम के लिए अकेला नहीं जाता था । एक दिन ऐसे ही गाँव के कुछ लोग झुंड में एक मेले में खरीददारी करने जा रहे थे, पर उनकी बदकिस्मती और ईरावती की खुशकिस्मती, ईरावती उनके सामने आ गई और उन सबका खून पीकर, उनके माँस को खा कर उनकी उम्र भी खा गई । अब तक ईरावती को यह सब भयानक कार्य करते हुए दस साल हो गए थे और अब ईरावती के साथ साथ गाँव की अन्य औरतें भी ताकत, सुंदरता और जवान बने रहने की चाह में डायन बन गई। अब गाँव में पहले से भी बहुत ज्यादा मौतें होने लगी। डायनें अब दिन दहाड़े लोगों को अपने माया जाल में फंसाती उनका खून पीती, माँस खातीं और उनकी उम्र खा लेती यहाँ तक कि उन्होने अपने घरों को भी नहीं छोड़ा।

जो गाँव वाले अब तक कुछ नहीं समझ पा रहे थे अब समझ गए कि गाँव में होने वली इन सब मौतों के पीछे कोई और नहीं बल्कि गाँव की औरतें ही हैं जो डायन बन चुकी हैं पर वे सीधे सादे गाँव वाले इसका कोई उपाय नहीं जानते थे। उन्हें लगा उनके पास न सही उनके महाराज विश्वास राव के पास इस समस्या का जरूर कोई समाधान होगा। वे जब अपने महाराज विश्वास राव के पास पहुंचे और उन्हें अपनी समस्या बताई कि महाराज हमारे गाँव में डायनें घूम रही हैं, किसी भी समय किसी न किसी को मार डालती हैं। तो उन्होने कहा कि वे जल्द से जल्द इस समस्या का निवारण ढूँढेंगे। विश्वास राव दिन रात महात्माओं की खोज करते रहे कि शायद कोई महात्मा मिल जाए जो इस समस्या का उपाय बताए परन्तु कोई फायदा नहीं हुआ।

मैं - बाबा डायनों की तो चोटी काटकर भी बचा जा सकता है न? और विश्वास राव के बारे में इतिहास में कुछ क्यों नहीं है? मैं फिर बीच में बोल पड़ा।

मेरे इतना बोलते ही बाबा जोर से हँसने लगे।

महात्मा जी - बेटा लगता है तुम चलचित्र बहुत देखते हो। अरे यह सब तो चलचित्रों में दिखाते हैं असलियत इससे कहीं दूर है, खैर तुम आगे सुनो, सब समझ जाओगे।

विश्वास राव के बारे में इतिहास इसलिए नहीं जानता क्योंकि उन्हे ऐसा कोई बड़ा कार्य करने का अवसर ही नहीं मिला।

विश्वास राव की दो रानियाँ थीं धारा और आख्या। जहाँ आख्या घरेलू कार्य और पाक कला में महारथ हासिल थी वहीं धारा राजकाज को भी बखूबी जानती थी और इसीलिए विश्वास राव अपने सभी फैसलों में धारा की राय जरूर लेते थे। इस बार भी उन्होने धारा से डायनों से बचने के बारे में बात की तो धारा ने कहा कि उसे इस सब के बारे में कोई ज्ञान नहीं है।

तब विश्वास राव ने अकेले ही महात्माओं को ढूँढने में दिन रात एक कर दिए और पंद्रह दिन के बाद उन्हें एक महात्मा मिले जिनसे उन्होने अपनी और अपने गाँव वालों की समस्या कही। तब उन महात्मा ने कहा कि डायनों को काले जादू में महारथ हासिल होती है इन्हें बल से कदापि नहीं मारा जा सकता है, इन्हें सिर्फ और सिर्फ जलाकर मारा जा सकता है और इतना ही नहीं, इनकी अस्थियों को, राख को तीन अलग अलग जगहों पर गाढ़ा जाना चाहिए और किन्हीं भी दो डायनों की अस्थियां और राख आस पास नहीं होनी चाहिए वरना यह वापस अपनी शक्तियां पा सकती हैं।

महात्मा जी के आदेशानुसार सभी गाँव वालों ने डायनों को फंसाने का एक रास्ता निकाला। गाँव का एक युवक ईरावती के पास गया और उससे कहा मैं भी पिशाच बनना चाहता हूँ मुझे भी ताकतवर बनना है तब ईरावती और अन्य डायनें उसे लेकर जंगल में गयी और कहा सबसे पहले तुम्हें शिकार करके खून पीना होगा। इस तरह से वह युवक ईरावती और अन्य डायनों को एक जंगल की तरफ़ ले गया वहाँ मौजूद विश्वास राव और हारांगुल गाँव वालों ने उन डायनों को एक एक पेड़ से बाँधकर जिंदा ही जला दिया और उनकी अस्थियों और राख को तीन अलग अलग जगहों पर गाढ़ आए यहाँ तक कि एक दूसरे को भी नहीं बताया कि कौन किसकी अस्थियाँ कहाँ गाढ़ कर आया है।

कुछ समय तक सब शांत रहा।अचानक एक दिन गाँव के कुछ लोग मारे गए और उनकी लाशें भी नहीं मिली।

विश्वास राव को इस बारे में जैसे ही पता चला वो वापस उन महात्मा को ढूँढने चले गए और इस बार उन्हें साथ लेकर ही लौटे।

महात्मा जी ने दो अभिमंत्रित लाल मिर्चें निकाली और विश्वास राव से कहा कि महाराज रात बारह बजे के बाद आप अकेले इन मिर्चों को पकड़कर पूरे गाँव में प्रत्येक घर के आगे कुछ क्षण रुकिएगा और जहाँ मिर्चें काली हो जाएं समझ लीजिए वहीं डायन का वास है।

विश्वास राव ने अकेले पूरे हारांगुल गाँव का चक्कर लगा लिया पर कहीं भी मिर्चें काली नहीं हुई। विश्वास राव आकर मिर्चें महात्मा जी को देने ही वाले थे कि तभी मिर्चें काली हो गई। महात्मा ने कहा क्षमा करें महाराज डायन राजमहल में है, आप जल्द से जल्द उसे खोजिए।

विश्वास राव ने पूरा महल देखा और अंत के कक्ष में गए तो देखा एक औरत काले कपड़े पहने हुए जमीन पर बैठी है, उसकी पीठ महाराज की तरफ थी, उसके आस पास काफी सारे कंकाल पड़े हुए थे, कहीं कहीं कटे हुए मुर्गे पड़े हुए थे, आस पास खून ही खून था, कुछ छोटी छोटी मूर्तियां इधर उधर पड़ी हुई थी।

विश्वास राव महात्मा जी को बुलाने गए और जब तक वो दोनों वहाँ पहुंचे वहाँ कोई नहीं था। बस वहाँ पर किसी औरत के गहने पड़े हुए थे। जब विश्वास राव ने उन गहनों को देखा तो वे उन गहनों को पहचान गए और बोले यह गहने मेरी पत्नी के हैं, तो क्या आख्या डायन है?तब महात्मा जी ने कहा महाराज हमें देर नहीं करनी चाहिए वरना हारांगुल में कोई भी जीवित नहीं बचेगा। विश्वास राव ने न चाहते हुए भी अगली सुबह सभी गाँव वालों को बुलाकर आख्या को एक पेड़ से बाँधकर जिंदा जला दिया और उसकी अस्थियों और राख को तीन अलग अलग जगहों पर गाढ़ आए।

परन्तु गाँव में मौतें होना बंद नहीं हुआ तब फिर विश्वास राव ने महात्मा जी को बुलाया और पूरे गाँव और अपने महल में देखा तो उन्हें अपने महल में उसी कमरे में मुर्गे को खाती हुई एक औरत दिखी, जब विश्वास राव सामने गए तो देखा कि वह कोई और नहीं बल्कि धारा थी, उसके मुँह पर खून लगा हुआ था। विश्वास राव ने उसे पकड़ लिया और उससे पूछा कि उसने यह सब क्यों किया क्या आख्या का आघात कम था जो उसने भी डायन बनना स्वीकार कर लिया। तब धारा बोली अरे मूर्ख राजा तू क्या प्रजा को चलाएगा जब तू अपनी पत्नियों को ही नहीं पहचान पाया, आख्या तो कभी इस प्रकिया में शामिल थी ही नहीं। उसके गहने हमने वहाँ रखे थे ताकि हम तुम सब का ध्यान भटका सकें और डायन बन सकें पर अफसोस तुम्हें सब पहले ही पता चल गया।

विश्वास राव ने सुबह पूरे गाँव के लोगों को इकट्ठा करके धारा को एक पेड़ से बाँध दिया और कहा तुमने हमारे हाथों एक मासूम की जान ली है, इस गाँव के न जाने कितने मासूमों को मार दिया, अब तुम्हें भी मरना होगा और इतना कहकर विश्वास राव ने धारा की ओर मशाल फेंक दी। धारा जलने लगी।

मैं - पर बाबा इस सब में मैं कैसे फंस गया मैं अभी तक नहीं समझ पा रहा हूँ। धारा, आख्या और विश्वास राव इन सब से मेरा क्या नाता?

महात्मा जी - बेटा तुम इतने अधीर क्यों हो रहे हो? सब्र रखो सब सच जान जाओगे।

मैं - बाबा आगे क्या हुआ? बाबा ने कहा मैं अधीर न बनू पर उस चुड़ैल के दर्शन अब तक इतनी बार हो गए थे कि मैं अधीर बन ही गया।

महात्मा जी - धारा और आख्या की मौत के बाद विश्वास राव ने बमुश्किल खुद को संभाला और डायनों से गाँव वालों को आजाद कराने वाले महात्मा अचिंत्य जी को हारांगुल से विदा किया।

बहुत महीनों बाद एक दिन महात्मा अचिन्त्य वापस हारांगुल आए यह सोचकर कि महाराज विश्वास राव का हाल पूछ लिया जाए। उन्होने जैसे ही गाँव की सीमा में पैर रखा, उन्हें एक अजीब सी मनहूसियत का आभास हुआ पर फिर भी वे आगे बढ़ने लगे, उन्होने देखा पूरा गाँव खाली पड़ा हुआ है, कहीं कोई नजर नहीं आ रहा। चलते चलते वे राजमहल तक पहुंच गए वहाँ उन्होने जो दृश्य देखा, वे बुरी तरह से चौंक गए। उन्होने देखा महाराज विश्वास राव अपने राजमहल की छत पर खड़े हुए हैं और कह रहे हैं " हमें क्षमा कर दो महारानी, हम आपको समझ न सके, हम आपके गुनाहगार हैं और इस सच के साथ हम जी नहीं सकते, यह हमारे गुनाह का प्रायश्चित है "। विश्वास राव इतना कहते ही राजमहल की छत से कूद गए और महात्मा अचिंत्य के समक्ष महज पैंतीस वर्ष की आयु में महाराज विश्वास राव ने अंतिम सांसे ली।

जब महात्मा अचिंत्य विश्वास राव का अंतिम संस्कार करके लौटे तब उन्होने उनके साथ रह रहे गाँव के एक परिवार से बात की कि ऐसा क्या हुआ जो महाराज विश्वास राव को आत्महत्या करनी पड़ी और सारा गाँव खाली क्यों है?

तब उस परिवार के मुखिया ने कहा अचिंत्य जी महाराज, आपके जाने के कुछ समय बाद ही इस गाँव के हालात पहले से भी बदतर हो गए, सारे गाँव वालों की फसलें नष्ट हो गई, कूओं से पानी की जगह खून निकलने लगा, लोग नये कूएँ भी खोदते तब भी उनसे पानी की जगह खून ही नकलता। इस सब से परेशान होकर हारांगुल वासियों ने गाँव छोड़ने का फैसला किया पर जो कोई भी गाँव छोड़ने की कोशिश करता, उसकी रहस्यमयी तरीके से मौत हो जाती और सिर्फ उनके कंकाल ही मिलते। अब कोई भी गाँव से बाहर नहीं जा सकता था और आस पास के गाँव वाले डर से गाँव में नहीं आते। इतना भी क्या कम था कि गाँव में ऐसा रोग फैल गया जिसपर राजवैद्य तक काबू नहीं कर पा रहे थे। और देखते ही देखते पूरा गाँव मौत के मुँह में चला गया, कोई नहीं

बचा। महाराज की माता जी और उनकी बहनें भी रहस्यमय तरीके से मृत्यु को प्राप्त हो गई। गाँव में सिर्फ हमारा परिवार मतलब हम, हमारे चार पुत्र और एक पुत्री, इनकी माता और महाराज विश्वास राव ही जीवित बचे थे। महामारी से बचने के लिए महाराज विश्वास राव ने हमें अपने राजमहल में ही शरण दे रखी थी, हम सभी पत्तों को, जंगली फलों को खाकर अपना जीवन बमुश्किल गुजार रहे थे। राजमहल में रहकर हम महामारी से तो बच गए परन्तु हम हर पल डर के साए में जीने लगे। रात होते ही पूरे राजमहल में चिता जलने की बू आने लगती और हर कक्ष से भयानक चीखें सुनाई देतीं, कभी कभी एक काला साया अचानक से हमारे सामने खड़ा हो जाता। कल रात को हम हमारी पत्नी और हमारे पाँचों पुत्र पुत्री सो रहे थे तभी महाराज के कक्ष से एक भयानक आवाज आई। जैसे ही हम सब वहाँ पहुंचे तो देखा वहाँ एक औरत महाराज का गला पकड कर खड़ी है जिसकी लाल आँखें है, बिखरे बाल हैं और वह पूरी तरह से जली हुई है, पहचानना मुश्किल था कि वह कौन है। वह हमें देख कर गायब हो गई और फिर रात को महाराज विश्वास राव के कक्ष से उनके रोने की आवाजें आती रही और आज सुबह तो आपके सामने ही उन्होने छत से कूद कर अपनी जीवन लीला समाप्त कर दी।

यह सब महात्मा अचिंत्य को बहुत अजीब लगा और सत्य जानने के लिए उन्होने महल के हर कोने में लाल रंग की रोली और हवन की भभूति डाल दी और अगले दिन रोली और भभूति को समेट लिया। उन्होने राजमहल में ही एक हवन किया जिसमें उन्होने उस रोली और भभूति को डाला, वह हवन लगातार इक्कीस दिन तक चला उसके बाद महात्मा अचिंत्य को वह सत्य पता चला जो कि हर किसी की सोच के बाहर था।

मैं - बाबा क्या था वो सच?

महात्मा जी - इक्कीसवें दिन महात्मा अचिंत्य जी को हवन कुण्ड की अग्नि में सब कुछ नजर आने लगा।

एक बार विश्वास राव किसी कार्य से दूसरे साम्राज्य में गये।जहाँ उन्हें घड़े बनाती हुई एक अत्यन्त सुंदर लड़की दिखी, यह धारा थी। विश्वास राव ने तुरन्त धारा के पिता से उसका हाथ माँग लिया और धारा से विवाह करके अपने साम्राज्य में लौट आए। विश्वास राव की पहली पत्नी आख्या को बहुत बुरा लगा कि अब विश्वास राव सिर्फ उसके नहीं रहे पर फिर भी उसने हालात से समझौता कर लिया।

धारा एक कुम्हार की पुत्री जरूर थी परन्तु बुद्धिमान भी थी। वह घर के हर कार्य में निपुण होने के साथ साथ राजकाज से संबंधित फैसलों में भी विश्वास राव को सलाह देने लगी और वास्तव में उसकी सलाह पर अमल करने से विश्वास राव को राजकाज संभालने में काफी सहूलियत हो गई और इस तरह कुछ ही समय में पूरे राजमहल में आख्या से ज्यादा पूछ धारा की होने लगी। आख्या एक राजकुमारी थी, उसे अपनी सुंदरता, पाक कला में निपुणता और रानी होने का बहुत गर्व था और उसे एक कुम्हार की पुत्री की इतनी पूछ होना खटकने लगा। वह हर वक्त कुछ न कुछ करती जिससे सभी उसपर ध्यान दें पर वह हर प्रयास में असफल रही।

एक दिन उसकी नौकरानी ने उससे कहा कि "ईरावती नाम की कोई औरत है जो डायन है और गाँव में ही और डायनें बनाना चाहती है और डायनें काले जादू में दक्ष होती हैं। काले जादू से कुछ भी किया जा सकता है, किसी को मारा जा सकता है तो किसी को सम्मोहित भी किया जा सकता है।" तब आख्या ने सोचा क्यों न महाराज विश्वास राव को सम्मोहित कर धारा को इस राजमहल से ही निकलवा दिया जाए और यदि यह न हो सका तो डायन बनकर हम खुद ही धारा की जान ले सकते हैं। यह सोचकर आख्या ईरावती के पास गयी और उससे खुद पर डायन बनाने की प्रक्रिया शुरु करने को कहा। पर इससे पहले कि आख्या पूरी तरह से डायन बन पाती, विश्वास राव को ईरावती के बारे में पता चल गया और वे महात्मा अचिंत्य को गाँव ले आए। महात्मा अचिंत्य ने ईरावती और बाकी डायनों को जिंदा जलवा कर उनकी राख और अस्थियों को तीन अलग अलग जगह जमीन में गड़वा दिया पर यह महात्मा अचिंत्य और विश्वास राव का दुर्भाग्य था कि आख्या डायन बनने वाली है यह किसी को पता न चला और वह बच गई। अब आख्या ईरावती के कहे अनुसार काला जादू करती रही और लोगों का माँस खाकर, खून पीकर प्रतिदिन शक्तियां बढ़ाने लगी, पर गाँव वालों ने दोबारा विश्वास राव को गाँव में हो रही मौतों के बारे मे बता दिया।

अब विश्वास राव ने दोबारा महात्मा अचिंत्य जी को हारांगुल बुलाया और उनके कहे अनुसार दो लाल मिर्चे लेकर पहले पूरे गाँव को और फिर राजमहल को खोजा और काला जादू करती हुई एक स्त्री को देख लिया और विश्वास राव महात्मा अचिंत्य जी को बुलाने गए पर तब तक वह स्त्री यानि कि आख्या वहाँ से भाग गयी पर हड़बड़ाहट में उसके गहने वहीं गिर गए और जब विश्वास राव, अचिंत्य जी के साथ लौट कर आए तो वहाँ सिर्फ़ आख्या के गहने थे। यह सब देखकर विश्वास राव समझ गए कि यह आख्या के गहने है और अचिंत्य जी के कहने पर विश्वास राव ने न चाहते हुए भी आख्या को सभी गाँव वालों के सामने जला दिया। सबको लगा डायनों की कहानी यहीं खत्म हो गई पर इंसान की जिंदगी में कोई भी कहानी खत्म नहीं होती है, बस एक नया मोड़ ले लेती है और डायनों के अंत से हुई चुड़ैल के खौफ की शुरुआत।

आख्या डायन बनना चाहती थी, विश्वास राव को धारा से दूर करना चाहती थी, काला जादू करती थी, उसे तो चुड़ैल बनना ही था।

आख्या ने चुड़ैल बनते ही सबसे पहले अपनी सबसे बड़ी दुश्मन धारा से बदला लेने की ठानी और गाँव वालों को इस तरह से मारने लगी जैसे डायनें मारती थीं और फिर उसने धारा पर वशीकरण किया और उसे उस कक्ष में बैठा दिया जहाँ वह खुद काला जादू करती थी वहाँ धारा वशीकरण के कारण मुर्गे का खून पी रही थी और दूसरी तरफ अचिंत्य ने विश्वास राव को डायन का पता लगाने के लिए महल में भेजा हुआ था और उस वक्त विश्वास राव ने धारा को काला जादू करते देख लिया और सोचा कि यही डायन है और अचिंत्य जी को बुला लिया। महात्मा अचिंत्य ने विश्वास राव से धारा को जलाने के लिए कहा ताकि गाँव वाले बच सकें और विश्वास राव ने न चाहते हुए भी सारे गाँव वालों को बुलाकर उनके सामने धारा को जलाने के लिए एक पेड़ से बाँध दिया। तब भी धारा वशीकरण में थी और आख्या ने उससे कहलवाया " अरे मूर्ख राजा तू क्या प्रजा को चलाएगा जब तू अपनी पत्नियों को ही नहीं पहचान पाया, आख्या तो कभी इस प्रकिया में शामिल थी ही नहीं। उसके गहने हमने वहाँ रखे थे ताकि हम तुम सब का ध्यान भटका सकें और डायन बन सकें पर अफसोस तुम्हें सब पहले ही पता चल गया। " और इस तरह विश्वास राव की नजर में आख्या निर्दोष और धारा दोषी साबित हो गई। आख्या ने अपना पहला बदला ले लिया।

आख्या ने अपना दूसरा बदला लेने के लिए गाँव वालों के ऊपर कहर की बरसात कर दी। गाँव के हर कुएँ में पानी की जगह खून निकलता, फसलें नष्ट हो गई और उसने लोगों का गाँव से निकलना बंद करवा दिया, उसने गाँव की सीमा पर काले जादू के बल से एक अदृश्य रेखा बना दी जिसे गाँव वाले जैसे ही लाँघते, कही से मटके में जलती हुई आग जिसको मूठ भी कहते हैं आकर उनपर गिर जाती और उनकी उसी वक्त मृत्यु हो जाती।

अब गाँव में सिर्फ विश्वास राव और एक परिवार ही बचे थे।

अब आख्या का तीसरा बदला था विश्वास राव की जान लेना।

सारे गाँव वालों की और अपनी माता और बहनों की मौत के बाद विश्वास राव टूट गए थे और एक दिन वे अपने कक्ष में विश्राम कर रहे थे तभी उन्हें एक अजीब सी आवाज सुनाई दी तो वो अपने कक्ष से बाहर निकलकर देखने लगे कि आवाज किस तरफ से आई है और चलते चलते वे राजमहल के उसी कमरे तक पहुँच गए जहाँ आख्या काला जादू करती थी और जैसे ही उन्होने कमरें में कदम बढ़ाया तो देखा कि उनका पैर एक काले घेरे में था। उस वक्त विश्वास राव यह समझ नहीं पाए कि यह क्या है, पर वह आवाज चुड़ैल बन चुकी आख्या ने उत्पन्न की थी ताकि विश्वास राव उस घेरे में कदम रखें और फिर वे वही देखें जो आख्या उन्हें दिखाना चाहे। वहाँ कुछ

न देखकर विश्वास राव वापस अपने कक्ष में लौट आए और वापस आराम करने लगे पर वे यह नहीं जानते थे कि अब आराम उनके जीवन से छिनने वाला है। अभी विश्वास राव अपने कक्ष में लौट कर आए ही तभी उन्हें एक भयानक चीख सुनाई दी और चिता जलने की बू आने लगी, उन्होने पूरे राजमहल में देखा पर कहीं कोई नहीं मिला बस एक भयानक काला साया दिखाई दिया जो पल भर में ही गायब हो गया। अब तो यह हर रोज का सिलसिला हो गया था विश्वास राव को किसी औरत की चीखें सुनाई देतीं, चिता जलने की बू आती और पल भर के लिए एक भयानक साया नजर आता। इन सभी घटनाओं के कारण विश्वास राव को उस बीमारी ने घेर लिया जिसे आज की भाषा में डिप्रेशन या तनाव कहते हैं। एक रात विश्वास राव अपने कक्ष में विश्राम कर रहे थे तभी उन्हें फिर से एक औरत की चीखें सुनाई दीं और चिता जलने की बू आने लगी पर इस बार काले साए की जगह वह चुड़ैल मतलब आख्या उनके सामने आकर खड़ी हो गई। उस चुड़ैल का चेहरा जला होने के कारण विश्वास राव उसे पहचान न सके तब उन्होने उस चुड़ैल से पूछा कि वह कौन है और क्या चाहती है तब उस चुड़ैल ने विश्वास राव को बताया " हम आख्या हैं जिसे तूने डायन समझकर जिंदा जला दिया। " तब विश्वास राव ने उससे क्षमा माँगी तो वह हँसने लगी और बोली " अरे मूर्ख राजा तू अपनी पत्नियों को नहीं समझ पाया तो अपनी प्रजा कैसे संभालता। हम ही थे जो डायन बनने वाले थे ताकि धारा की जान ले सकें पर हमारे डायन बनने से पहले ही तूने हमें जला दिया पर देख हम चुड़ैल बन गए और धारा पर वशीकरण करके उसे तेरी और सबकी नजरों में दोषी साबित करा दिया। हमने उसे डायन साबित करके अपना प्रथम प्रतिशोध ले लिया और जिन गाँव वालों ने हमारी गुरू ईरावती को जिंदा जला दिया था, उनकी जान लेकर हमने अपना द्वितीय प्रतिशोध ले लिया और जिसने हमें जिंदा जला दिया उसे मारकर हम अपना तृतीय प्रतिशोध लेंगे.......पर तुझे हम नहीं मारेंगे हम तुझे जिंदा रखेंगे ताकि तू हर रोज थोड़ा थोड़ा मरे। " इतना कहकर उसने विश्वास राव का गला पकड़कर उन्हें दूर फेंक दिया और गायब हो गई। इस आघात को विश्वास राव झेल नहीं पाए, रात भर रोते रहे और अगली सुबह विश्वास राव ने धारा से क्षमा माँगते हुए कहा " हमें क्षमा कर दो महारानी, हम आपको समझ न सके, हम आपके गुनाहगार हैं और इस सच के साथ हम जी नहीं सकते, यह हमारे गुनाह का प्रायश्चित है "।इतना कहकर वे छत से कूद गए और अचिंत्य जी के सामने दम तोड़ दिया।

अभी महात्मा अचिंत्य का हवन खत्म ही हुआ था कि चारों तरफ अंधेरा छा गया और कुछ बच्चों के चीखने की आवाजें आई, महात्मा अचिंत्य ने कक्ष से बाहर निकलकर देखा तो एक पल के लिए वे सकते में आ गए, उस चुड़ैल ने विश्वास राव के साथ रह रहे परिवार के बच्चों को आग के घेरे में कैद कर रखा था और उनके माता पिता के शव उनके सामने पड़े हुए थे। अब वह चुड़ैल अचिंत्य जी के सामने खड़ी थी और चिल्लाते हुए बोली " तुझे सब पता चल गया न, जानता है क्यों..... क्योंकि हमने तुझे सब पता लगने दिया अब देख हम क्या क्या करते हैं। जानता है न

सब....... धारा मरी..... हमारा प्रथम प्रतिशोध पूर्ण हुआ, उन गाँव वालों को हमने तड़पा तड़पा कर मार दिया और..... और हमारा द्वितीय प्रतिशोध पूर्ण हो गया, जिस राजा विश्वास राव ने हमें डायन बनने से पहले ही जिंदा जला दिया उसे मारकर हमने अपना तीसरा प्रतिशोध ले लिया और अब....... अब हमारा चौथा और आखिरी प्रतिशोध पूरा होगा जब डायनों को खत्म करने वाला मरेगा, हमारी मौत का कारण मरेगा, मतलब तू मरेगा, हमारे सर्वनाश का कारण है तू, तूने हमें एक बार मारा है, हम तुझे तेरे हर जन्म में मारेंगे, तेरी आत्मा को हमने पहचान लिया है और अब हम तेरे हर जन्म में तेरा इंतजार करेंगे.......तुझे मारने के लिए तब तक..... मुझे याद रखना " इतना कहकर उस चुड़ैल ने महात्मा अचिंत्य की तरफ तंत्र विद्या से इशारा किया और दो काली कीलें उनकी आँखों में धंस गई उसके बाद कोई भारी चीज महात्मा अचिंत्य के दोनों पैरों पर गिर गयी और वे जमीन पर गिर पड़े। अब चुड़ैल ने आखिरी वार किया और महात्मा अचिंत्य को उठाकर उनके सिर और धड़ को दो भागों में कर दिया।

तो हर्षद क्या अब तुम समझे वह चुड़ैल क्यों तुम्हारे पीछे पड़ी हुई है?

मैं - ऐसा सच में हो सकता है बाबा कि कोई किसी से सदियों से बदला लेने के लिए इस पृथ्वी पर रहता रहे? मैंने आश्चर्य से पूछा।

महात्मा जी - क्यों नहीं हो सकता बेटे.... इस पृथ्वी पर सबकुछ संभव है।

मैं - बाबा मैं समझ गया वो चुड़ैल मुझसे बदला लेना चाहती है पर बाबा आपको यह सब कैसे पता चला और मुझे अपने पिछले जन्म का कुछ भी याद क्यों नहीं है? मैंने एकसाथ बाबा से सबकुछ पूछ लिया।

महात्मा जी - अभी एक घंटे पहले हमने एक नारियल लेकर पहले तुम्हारे सिर पर लगाया और फिर अपने सिर पर लगाया था, उस नारियल को हमने पहले ही सिद्ध कर लिया था, जो कुछ तुमने अपने पिछले जन्म में देखा, वह सब हमने देखा और तभी हमने आप सभी को सब बताया।

देखो हर्षद पिछले जन्म का मतलब सब कुछ याद रहना नहीं होता है। पिछले जन्म का या पुनर्जन्म का मतलब आत्मा का एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रवेश करना होता है। जरूरी नहीं कि

हर व्यक्ति को अपना पिछला जन्म याद रहे....... यह बस तभी होता है जब या तो उसपर भगवान की कृपा हो या फिर उस आत्मा ने किसी विशेष कारण से पृथ्वी पर जन्म लिया हो।

मैं - बाबा हम सब उस चुड़ैल से कैसे बच पाएंगे? उससे बचने का क्या तरीका है?

महात्मा जी - उस चुड़ैल से आप सभी को सिर्फ तभी छुटकारा मिल सकता है जब आप में से कोई उस चुड़ैल की अस्थियों का विसर्जन कर दे।

बाबा की बात सुनकर भैया ने कहा " तो ठीक है बाबा हम आज ही उस चुड़ैल की अस्थियों को विसर्जित कर देंगे "

" हाँ भैया सही कह रहे हैं हमें आज ही उस चुड़ैल की अस्थियों को विसर्जित कर देना चाहिए तब तो सब ठीक हो जाएगा " अनन्या ने भी भैया की बात पर सहमति देते हुए कहा।

महात्मा जी - करन (मेरे भैया) पहली बात तो यह कि यह काम इतना भी आसान नहीं है जितना आप सभी इसे समझ रहे हैं, दूसरी बात.....क्या आपमें से कोई जानता है कि उसकी अस्थियां कहाँ पर हैं?

" पर बाबा आपने तो उस नारियल से सब पता कर लिया था तो आपको यह भी पता होगा कि अस्थियां कहाँ हैं " मैंने बहुत निश्चिंतता से कहा।

महात्मा जी - हमने बस वही देखा जो तुमने उस जन्म में देखा था..... जो तुमने नही देखा उसे हम भी नहीं देख सके।

" पर बाबा जब विश्वास राव ने ही आख्या की अस्थियां कहीं छिपाई हैं, तो आपको सब दिख जाना चाहिए था। " मैंने आश्चर्य से कहा।

महात्मा जी - तुम अब तक गलत समझ रहे हो, आख्या की अस्थियां विश्वास राव ने छिपाई थीं, महात्मा अचिंत्य ने नहीं।

" मतलब मैं पिछले जन्म में विश्वास राव नहीं महात्मा अचिंत्य था...... पर आपने तो बताया था कि चुड़ैल ने विश्वास राव से कहा था कि वह उसे थोड़ा थोड़ा मारेगी और अगर मैं विश्वास राव नहीं, धारा चुड़ैल नहीं तो उस कागज पर आपने विश्वास राव और धारा के नाम क्यों लिखे थे? " मैं आश्चर्य में था।

" हाँ अब तुम ठीक समझे, तुम महात्मा अचिंत्य ही थे.......हमने बताया था कि चुड़ैल ने विश्वास राव से कहा था कि वह उन्हें थोड़ा थोड़ा मारेगी पर उसने महात्मा अचिंत्य से कहा था कि उसने उनकी आत्मा को पहचान लिया है और अब वह उनके हर जन्म में उन्हें मारेगी। उस कागज पर हमने धारा और विश्वास राव के नाम इसलिए लिखे क्योंकि तुम्हें उस चुड़ैल से सिर्फ वे ही बचा सकते हैं। " महात्मा जी ने अब भी शांति से कहा।

" तो अब हमें कैसे पता चलेगा कि आख्या की अस्थियां कहाँ हैं क्योंकि विश्वास राव और धारा दोनों ही मर चुके हैं ? " मैंने पूछा।

" तुम्हें पता है तुम्हारे साथ बारह सड़क दुर्घटनाएं क्यों हुई?"

बाबा ने पूछा।

" क्या इसका भी कोई कारण है बाबा? " मैं और परेशान हो गया एक गुत्थी सुलझ नहीं पाई है इतने में दूसरी.....हद है।

" हाँ इसका भी एक कारण है। अब समय आ गया है जब न्याय होगा। महात्मा अचिंत्य ने गलती से धारा को डायन समझकर जिंदा जलवा दिया था जबकि वह डायन नहीं थी, वह वशीकरण में ऐसा कर रही थी और आख्या को उन्होने डायन समझकर जिंदा जलवा दिया था जबकि वह डायन बनने वाली थी बनी नहीं थी, उसका अंतिम संस्कार होना चाहिए था न कि डायनों की तरह उसकी अस्थियां तीन जगह गाढ़ी जानी थी। यदि आख्या का विधिवत् अंतिम संस्कार हुआ होता तो वह

चुड़ैल नहीं बनती और न ही विश्वास राव की जान जाती। महात्मा अचिंत्य की इन दो गलतियों की सजा अब हर्षद भुगत रहा है और विश्वास राव और धारा की आत्मा आज तक भटक रही हैं, मुक्ति पाने के लिए। उन्हें मुक्ति तभी मिल सकती है जब महात्मा अचिंत्य उनसे अपनी गलतियों की क्षमा माँगे यानि कि तुम्हें उनसे क्षमा माँगनी होगी, यदि उन्होने तुम्हें क्षमा कर दिया तो विश्वास राव तुम्हें आख्या की अस्थियों की जगह बता देंगें। "

मैं यह सुनकर निराश हो गया था कि पिछले जन्म में ही सही पर मैंने किसी की जान ले ली। " बाबा क्या वे दोनों मुझे माफ कर पाएंगे? "

महात्मा जी - चिंता मत करो बेटे अब न्याय होगा, ईश्वर न्याय करेंगे तुम्हारे साथ भी और उनके साथ भी...... प्रतीक्षा करो।

मैं - कैसी प्रतीक्षा बाबा?

महात्मा जी - बेटे हमें अमावस्या की प्रतीक्षा करनी होगी।

मैं - बाबा अमावस्या की प्रतीक्षा क्यों?

महात्मा जी - बेटे वे आत्माएं हैं हम किसी भी हाल में उन्हें अमावस्या से पहले नहीं बुला पाएंगे।

मैं - जी महात्मा जी, मैं समझ गया।

" बाबा अगर विश्वास राव और धारा ने इसे माफ नहीं किया तो हम हर्षद को चुड़ैल से कैसे बचा पाएंगे " पापा ने चिंता में पूछा।

महात्मा जी - आप सभी चिंतित न हों हम हर्षद को चुड़ैल से हर परिस्थिति में बचाएंगे, यह अब हमारी जिम्मेदारी है और यदि हम उस चुड़ैल को हरा न सके तो उसे इससे दूर रखेंगे। आप सभी ईश्वर के न्याय पर भरोसा रखिए इसे कुछ नहीं होगा।

मैं - बाबा हम धारा और विश्वास राव की आत्माओं को कब, कहाँ और कैसे बुलाएंगे?

महात्मा जी - बेटे अब तक शायद तुम इतना तो समझ ही गये होगे कि हर कोई आत्मा मंदिर में प्रवेश नहीं कर सकती। हमें...

मैं -बाबा अगर विश्वास राव और धारा की आत्माएं मंदिर में आएंगी ही नहीं तो मैं उनसे माफी कैसे माँग पाउंगा और विश्वास राव मुझे आख्या की अस्थियों के बारे मे कैसे बता पाएंगे? मैं बाबा की पूरी बात सुने बिना ही बीच में बोल पड़ा।

महात्मा जी - देखो बेटे यह तुम्हारा पुलिस स्टेशन नहीं है यहाँ तुम्हें अपने कानूनों से नहीं ईश्वर के बनाए नियमों से चीजों को समझना होगा।

कोई भी आत्मा मंदिर में प्रवेश तभी कर सकती है जब उसने कभी किसी का बुरा नहीं किया हो पर विश्वास राव ने निर्दोष धारा को डायन समझकर जिंदा जला दिया था इसलिए वे मंदिर में प्रवेश नहीं कर सकते।

हमें अमावस्या को मंदिर के बाहर एक हवन करना होगा जिससे वे यहाँ आ सकें और तुम उनसे क्षमा माँग सको, यदि उन्होने तुम्हें क्षमा कर दिया तो वे मुक्त हो जाएंगे और विश्वास राव तुम्हें आख्या की अस्थियों के बारे में बता देंगे।

हम सभी महात्मा जी से बात करके अच्छा महसूस कर रहे थे पर हमें क्या पता था कि यह तूफान से पहले की शांति है।

हम सभी मंदिर के खाली कमरे में जाकर बैठ गए और महात्मा जी मंदिर के दूसरे कमरे में आराम करने चले गए।

मुझे प्यास लगने लगी तो मैं मंदिर के प्रांगण में पानी पीने चला गया। मैंने पानी पीने के लिए गिलास निकाला ही था कि इतने में मेरे हाथ में बहुत तेज दर्द हुआ जैसे किसी ने कीलें चुभा दी हों और पानी का गिलास मेरे हाथ से छूट गया। गिलास गिरने की आवाज सुनकर माँ मेरे पास आई और पूछने लगी " क्या हुआ हर्ष, तू ठीक है न? "

मैंने सोचा मैं मंदिर में हूँ तो वह चुड़ैल मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती, मेरा वहम होगा। यह सोचकर मैंने माँ से कहा " कुछ नहीं माँ बस ऐसे ही हाथ से छूट गया, सब ठीक है। "

माँ वापस कमरे में चली गई और मैं महात्मा जी के पास उनसे कुछ पूछने गया, पर हाथ में दर्द की वजह से भूल गया कि क्या पूछना है और फिर महात्मा जी मेरे साथ मंदिर के प्रांगण में टहलने लगे।तभी मेरे फोन पर अमन का का ॅल आ गया।

" हैलो सर, कैसे हैं ?"

" मैं ठीक हूँ, बोलो... "

" सर यहाँ हालात बिगड़ते ही जा रहे हैं दो और मौतें हो गई है जिनमें कातिल का कोई सुराग नहीं मिल रहा। "

" ठीक है अमन, मैं कल देहरादून आ गया था, कल अ ॅफिस में आता हूँ तब देखते हैं। "

" ओके सर, हैव अ गुड डे। " कहकर अमन ने फोन रख दिया।

इस बार फोन मेरे हाथ से छूट गया और मुझे ऐसा लग रहा था जैसे कोई मेरे दांए हाथ और दांए पैर में खंजर घोंप रहा है और सच में मेरे हाथ और पैर से खून निकलने लगा।

महात्मा जी शायद सब समझ गए और देर न करते हुए भागकर हनुमान जी की रोली ले आए और मेरे माथे पर रोली का तिलक लगा दिया। सच में रोली का तिलक लगते ही मेरे हाथ और पैर का दर्द काफी कम हो गया।

महात्मा जी - बेटे क्या वह चुड़ैल तुम्हारे बाल ले गई है?

मैं - जी बाबा, मैं पहले बताना भूल गया था।

महात्मा जी - तुम्हें पता भी है तुम कितनी बड़ी बात बताना भूल गए?

मैं - बाबा क्या इसका भी कोई उपाय है?

महात्मा जी - हाँ बिल्कुल है, चलो मेरे साथ।

महात्मा जी अपने कमरे में गए और एक सफेद कपड़े का टुकड़ा निकाला फिर उस सफेद कपड़े से एक पुतला बनाया और मुझसे मेरे कुछ बाल मांगे, मुझे थोड़ा अजीब लगा पर मैंने बाबा को अपने बाल दे दिए। उन्होने उस सफेद कपड़े के पुतले पर मेरे बाल लगा दिए और मंदिर में जाकर वह सफ़ेद कपडे का पुतला हनुमान जी की मूर्ति के चरणों में रख दिया। उनके ऐसा करने से मेरे हाथ और पैर के घाव बिल्कुल गायब हो गए।

महात्मा जी मेरी तरफ देखकर बोले " जिस तरह काला जादू होता है उसी तरह सफेद जादू भी होता है और उस चुड़ैल ने अपने काले जादू से तुम्हारे नाम का पुतला जागृत कर लिया और इसलिए जो कुछ वह पुतले के साथ कर रही थी वही तुम्हारे साथ भी हो रहा था। अब हमने सफेद जादू से तुम्हारे नाम का पुतला जागृत कर लिया और यही उस चुड़ैल के जागृत किए गए पुतले का तोड़ है। "

मैं - धन्यवाद बाबा, आप मेरी इतनी मदद कर रहे हैं।

मैं बाबा से बात कर रहा था कि तभी भैया आ गए और बोले " हर्षद अनन्या के किसी रिश्तेदार की मौत हो गई है इसलिए हम सबका आज ही वापस हरिद्वार जाना जरूरी है। "

" ठीक है भैया आप चलिए मैं आता हूँ " मैं चिंता में आ गया कि मंदिर से बाहर निकलते ही तो चुड़ैल किसी को नहीं छोड़ेगी।

" तुम चिंता मत करो बेटे हमारे पास हर परिस्थिति का उपाय है।" कहकर बाबा अपने कमरे में चले गए और कुछ सामान हाथ में लेकर लौटे।

मैं - यह सब क्या है बाबा?

महात्मा जी - यह कुछ अभिमंत्रित कीलें हैं, इन्हें अपने घर के प्रत्येक खिड़की दरवाजे पर लगा देना इससे वह चुड़ैल अंदर नहीं आ सकेगी। कोशिश करना कि ज्दातर सभी लोग घर में ही रहें परन्तु यदि किसी कारणवश घर से निकलना पड़े तो यह धागे बाँधकर ही घर से निकलना। तुम यह धागा बाँध लेना, वह चुड़ैल तुम्हें डराएगी पर तुम्हें नुकसान नहीं पहुंचा सकेगी। बस अमावस्या तक धैर्य रखो बेटे।

मैंने बाबा को धन्यवाद कहा और बाबा ने वे कीलें और धागा मुझे पकड़ा दिया और फिर हम सभी बाबा से आज्ञा लेकर क्वार्टर पहुंच गए। रामू काका को किसी काम से गाँव जाना पड़ गया था और हम सब बहुत भूखे थे इसलिए अनन्या और भाभी कुछ देर बैठने के बाद खाना बना लाए और हम सब खाना खाने लगे और फिर मुझे छोड़कर सभी वापस जाने की तैयारी करने लगे। जब सब वापस इकठ्ठा हुए तो मैंने आधी कीलें पापा को दे दी और आधी अनन्या के पापा को, और सबके हाथों पर महात्मा जी का दिया हुआ धागा बाँध दिया।

अब तक शाम के छः बज चुके थे। कुछ ही देर में कैब आ गई और मैंने अपने और अनन्या के माँ पापा का आशीर्वाद लिया और उनका सामान कैब में रखने लगा यह सोचकर कि क्या पता फिर मौका मिले न मिले।

माँ - देख बेटा अब जब तुम दोनों की शादी होने वाली है तो अब हम दोनों परिवारों को सुख दुःख भी मिलकर बाँटने होंगे। अभी जाना पड़ रहा है पर तू चिंता मत करना और अपना ध्यान रखना, फोन करता रहना।

पापा - तू जब फोन करेगा तब हम सभी आ जाएंगे ठीक है, अपना ध्यान रखना।

सब चले गए..... मैं फिर से इस क्वार्टर में अकेला रह गया थोड़ी देर तक हॉल में बैठा रहा फिर अपने कमरे में जाकर लेट गया, बहुत थकान हो रही थी इसलिए पता भी नहीं चला, कब नींद आ गई।

अभी मुझे सोए हुए ज्यादा देर नहीं हुई थी कि तभी अचानक मेरी नींद खुल गई और पूरे कमरे में चिता जलने की बदबू भर गई, वह चुड़ैल मेरे बांई तरफ आकर बैठ गई और बोली " तुझे लगा तेरा हमसे पीछा छूट गया.......तुझे हम मारकर ही रहेंगे.....तू हमसे बच नहीं सकता "

इतना कहकर वह बहुत तेज गुर्राने लगी और फिर गायब हो गई, पर आज मेरे हाथ में धागा बंधा हुआ था इसलिए वह मेरा कुछ नहीं बिगाड़ पाई और गायब हो गई।

जब मैं आॅफिस पहुंचा तो हमेशा की तरह अमन ने मुझे गुड मॅर्निंग विश किया।

" अमन सारे केसेज़ की फाइल्स मेरे कैबिन में लेकर आओ " मैं जाते ही काम पर जुट गया और शायद मेरी इसी आदत की वजह से मेरे साथ काम करने वाले लोग मुझसे परेशान हो जाते हैं।

" जी सर " कहकर अमन कुछ फाइल्स निकालने लगा और मैं अपने कैबिन में जाकर बैठ गया।

" मे आय कम इन सर? "

" यस कम इन "

" सर ये उन सारे केसेज़ की फाइल्स हैं जब आप यहाँ नहीं थे "

तभी रागिनी और अर्जुन आ गए और मैं एक फाइल उठाकर पढ़ने लगा। अचानक मेरे कैबिन में चिता जलने की बदबू भर गई और जो फाइल मैं पढ़ रहा था उसमें आग लग गई और फिर टेबल पर रखी हुई सारी फाइल्स एक एक कर जलने लगी। वह चुड़ैल आकर मेरे सामने खड़ी हो गई, इस बार वह और भी ज्यादा डरावनी लग रही थी। उसके बाल हवा में उड़ रहे थे और उसका पूरा चेहरा बहुत बुरी तरह से जला हुआ था, उसकी पलकें नहीं थी और उसके होठ भी पूरी तरह से जल गए थे बस दाँत नजर आ रहे थे और दाँत भी ऐसे नुकीले जैसे शेर के होते हैं और वो अपनी जली हुई नाक से हम सबको सूँघने लगी जैसे शेर अपने शिकार को सूँघता है और वह अपनी अंगारों जैसी लाल आँखों से हमे ऐसे घूर रही थी जैसे अभी हमें कच्चा ही खा जाएगी। अचानक वो ठीक मेरे

सामने आकर खड़ी हो गई और बोली " तू मला जीवंत बर्न केलेस आता मी तुला कसे मारतो ते मला आठवण करून दे (तूने मुझे जिंदा जलवाया था अब देख मैं तुझे कैसे मारती हूँ तब तक मुझे याद रखना) " उसने इतना कहा और मेरा गला पकड़ने वाली थी कि उसे एक करंट का झटका सा लगा और वह चीखती चिल्लाती गायब हो गई।

मुझे कुछ समझ नहीं आया वह क्या बोल रही थी।

" सस्स... स...र य....ह क्कक.... क्या था? " अमन डर के मारे लगभग फुसफुसा के बोल रहा था और अर्जुन और रागिनी तो बिना कुछ बोले ही बेहोश हो गए।

" दिख नहीं रहा था तुम्हें वो कौन थी.... यह भी मैं बताऊं क्या.....समझ नहीं आया वो वही चुड़ैल थी जो इतने दिन से मेरे पीछे पड़ी हुई है। " मैं गुस्से और डर से अमन पर चिल्लाते हुए बोला।

" सॉरी सर वो मैं बहुत डर गया था इसलिए गलती से मुंह से निकल गया। "

मुझे बुरा लगा मैं बिना वजह उसपर चिल्ला दिया। पर अब मै इतना तो समझ गया था कि जब तक यह अभिमंत्रित धागा हमारे हाथों में है, तब तक वह चुड़ैल मेरा और मेरे परिवार का कुछ नहीं बिगाड़ सकती और इसीलिए गुस्से से पागल हो रही है, मुझे कुछ खुशी सी हो रही थी पर मेरी यह खुशी तब खत्म हो गई जब मेरे कैबिन में वापस चिता जलने की बदबू भर गई और फिर उस चुड़ैल ने अमन को पकड़ कर अपने नाखून तीन इंच लंबे कर लिए और अमन के दोनों हाथों में चुभा दिए, वह दर्द से चिल्लाने लगा और उसकी चीख सुनकर आॅफिस के बाकी लोग भी मेरे कैबिन में आ गए अब हम तेरह लोग हो गए थे। तभी अर्जुन को होश आ गया और उसने चुड़ैल पर पिस्तौल तान दी पर इससे पहले कि वह फायर कर पाता, चुड़ैल एक पल में उसके सामने खड़ी हो गई और बोली " पिछली बार तो तेरा पैर तोड़ा था इस बार गर्दन तोड़ रहे हैं " कहकर उसने अर्जुन के सिर और धड़ को एक झटके में ककड़ी की तरह तोड़कर अलग कर दिया। अर्जुन की जान लेकर वो मेरी तरफ पलट कर बोली " बोल यह धागा उतारेगा या औरों को भी मार दें "

इतना कहकर उस चुड़ैल ने दो कॉन्स्टेबल्स को पकड़ा और उनके खून की एक एक बूँद पी गई और फिर मेरे सामने आकर बोली " बोल अब धागा उतारेगा या नहीं बोल "

मैं जीना चाहता था पर इतने लोगों की जान लेकर नहीं इसलिए मैंने अमन से कहा कि " तुम यह धागा रख लो और जब यह चुड़ैल किसी को भी मारने बढ़े उसे यह धागा बाँध देना " और मैंने धागा अमन को पकड़ा दिया।

मेरे धागा उतारते ही उस चुड़ैल ने मुझे उठाकर फेंक दिया और मैं कैबिन का दरवाजा तोड़ते हुए बाहर जा गिरा फिर वह चुड़ैल हवा में उड़ती हुई मेरे सामने आई और अपना एक पैर मेरी गर्दन पर रख कर बोली " तू मुझसे बच नहीं सकता है, तुझे सारा सच जानने का बहुत शौक है न...... अब तेरे सच जानने के बाद भी तू कुछ नहीं कर पाएगा " इतना कहकर उसने एक काला पत्थर मेरे सिर पर दे मारा और मैं बेहोश हो गया।

जब मुझे होश आया तो देखा मैं हॉस्पीटल में हूँ और अमन मेरे बांई तरफ बैठा हुआ है, उसके दोनों हाथों पर पट्टियां बंधी हुई है।

" सर आप ठीक तो हैं न? " अमन ने मुझसे पूछा।

" अमन मैं तो ठीक हूँ पर इससे ज्यादा मेरे लिए यह जानना जरूरी है कि कहीं उस चुड़ैल ने किसी और को तो कोई नुकसान नहीं पहुँचाया? "

" नहीं सर, सब ठीक हैं, वह चुड़ैल आपको मारने के बाद गायब हो गई और तब मैं उन्हें हनुमान जी की एक तस्वीर देकर आपको यहाँ ले आया। "

" फिर ठीक है अमन, यह बताओ वह धागा किसके पास है? "

" सर यह रहा " कहकर उसने अपनी जेब से वह धागा निकालकर मुझे दिया तो मैंने वह धागा लेकर उसके हाथ पर बाँध दिया।

" सर यह आप क्या कर रहे हैं इसकी जरूरत तो आपको है, मैं ठीक हूँ सर " अमन कुछ हड़बड़ा सा गया, शायद उसे इसकी उम्मीद नहीं थी।

" अमन मैं यह धागा न बाँधू तो वह चुड़ैल सिर्फ मुझे नुकसान पहुंचाएगी पर अगर मैंने यह धागा बाँध लिया तो वह मुझे नुकसान पहुंचाने के लिए मुझसे जुड़े हर इंसान को नुकसान पहुंचाएगी। मैं यह धागा बाँधे रहूँ या चाहे न बाँधे रहूँ, मुझे तो वह चैन से जीने नहीं देगी तो फिर मैं अपनी वजह से सबकी जान क्यों खतरे में डालूँ। "

अमन ने चुपचाप धागा बंधवा लिया।

" अमन एक काम करो सबको जाके एक एक हनुमान जी की तस्वीर दे दो और तुम यह धागा मत उतारना।"

" ठीक है सर मैं चलता हूँ अपना ध्यान रखिएगा। " कहकर अमन चला गया।

अभी तो मैं होश में आया ही था पर पता नहीं कैसे दोबारा नींद आने लगी और मैं सो गया। जब दोबारा नींद खुली तो लग रहा था जैसे मैं " मैं " नहीं " कोई और " हूँ, सिर में अजीब सा भारीपन लग रहा था, कुछ देर बाद डॉक्टर ने मुझे डिस्चार्ज कर दिया। मैं हॉस्पीटल से निकलकर सड़क के एक किनारे चल रहा था पर यह मेरे क्वार्टर का रास्ता नहीं था, पता नहीं मैं कहाँ और क्यों जा रहा था बस चल मैं रहा था और मुझ पर कंट्रोल किसी और का था। मैं सबकुछ समझ रहा था पर कर कुछ नहीं सकता था....मैं बस चल रहा था और अचानक मुझे एक गिलहरी दिखी जिसपर मै ऐसे झपट पड़ा जैसे मैं सालों से भूखा हूँ, मैंने उसे कच्चा ही खा लिया। वैसे तो मैं एक राजपूत हूँ पर फिर भी कभी नॉन वेज नहीं खाया पर आज यह क्या हुआ, क्यों हुआ मै समझ नहीं पा रहा था। यूँही चलते चलते मैं रात के करीब दस बजे क्वार्टर पहुंचा और जाकर अपने कमरे में सो गया।

आज सुबह सुबह यह कैसी आवाजें आ रही हैं मैं मन में सोचने लगा, सिर दर्द से फटा जा रहा था, जैसे ही नीचे गया देखा वह चुड़ैल सोफे पर बैठी हुई है और किसी बंदर को खा रही है, सोफे के आस पास उस बंदर का खून ही खून पड़ा हुआ है। वह एकदम से मेरे सामने आकर खड़ी हो गई और बोली " तू यही सोच रहा है न कल तूने गिलहरी कैसे खा ली.....यह देख " कहकर वो एक काले धुंए में बदल गई और वो धुंआ मेरे अंदर घुस गया।

तब मुझे समझ आया कि वह चुड़ैल कल भी मेरे शरीर में प्रवेश कर चुकी थी शायद इसीलिए मैं सब कुछ समझते हुए भी कुछ नहीं कर पाया.......मैंने वह गिलहरी खा ली वो भी इसीलिए, अब मैं उस बंदर को कच्चा खा रहा हूँ जिसे वह चुड़ैल खा रही थी इसलिए क्योंकि अब वह चुड़ैल मेरे शरीर में प्रवेश कर चुकी थी।

चार दिन तक मैं यूँही जानवरों को खाता रहा न नहाया, न खाना खाया, न आॅफिस गया। वह चुड़ैल छः दिनों से मेरे शरीर में थी।

शाम हो गई, डोरबेल बजी..... बहुत मुश्किल से मैं दरवाजा खोल पाया, देखा तो सामने भैया थे और उन्हें देखते ही मैं बेहोश हो गया। जब मुझे होश आया तो माँ पापा भाभी और भैया सब मेरे आस पास खड़े हुए थे।

" तुझे क्या हुआ था हर्षु?" बचपन से हमेशा भैया डाँटते ही रहे पर आज मुझे ऐसे बेहोश देखकर डर गए थे और इसीलिए इतने प्यार से बात कर रहे थे वरना भैया और मुझसे सीधे सीधे बात करें तब तो अजूबा ही हो जाए।

" हाँ....ठीक हूँ भैया, आप सब यहाँ कैसे आपके कॉलेज में तो छुट्टियाँ नहीं हुई न फिर? "

मैंने बात बदलने की कोशिश की।

" पगले मैं प्रोफेसर बाद में हूँ पहले तेरा भाई हूँ, भूल गया कल अमावस्या है "

आज तो भैया बड़ा प्यार दिखा रहे थे और जब सही था तब तो डांटते रहते थे।

" भैया इस बारे में कोई बात मत करो वह यहीं है। "

मैं जानता था कि वह यहीं कहीं है क्योंकि वो मुझे किसी भी हाल में अमावस्या को हवन में नहीं जाने देगी।

" यह रामू भैया भी न पता नहीं कब गाँव से आएंगे सफर से आकर भी काम करना पड़ता है "

माँ ने बहुत परेशान होकर कहा और भाभी को लेकर खाना बनाने किचन में चली गईं।

वे दोनों अभी किचन में गई ही थीं कि उनके चिल्लाने की आवाज सुनकर मैं, भैया और पापा भागकर किचन में गए और हमें एक बड़ा झटका लगा, माँ और भाभी के सामने एक बुरी तरह चबाया हुआ, कटा हुआ हाथ पड़ा हुआ था। भैया और पापा उसे समेटने लगे और कर भी क्या सकते थे। पर मैं वहीं फ्रीज़ सा हो गया, पैरों में एकदम ठंड का एहसास हुआ और पूरे शरीर में सिहरन दौड़ गई, उस हाथ को देखकर नहीं, बल्कि यह सोचकर कि कहीं चुड़ैल मेरे परिवार को कुछ कर न दे। अब कुछ नहीं हो सकता था, मैं और मेरा परिवार, हम बहुत मजबूर थे। इस सब के बाद किसी ने खाना नहीं खाया और सब अपने अपने कमरों में जाकर सो गए।

रात के करीब तीन बजे भैया के चिल्लाने की आवाज आई और जब मैंने कमरे से बाहर निकलकर देखा तो आँखें फटी की फटी रह गई, डाइनिंग टेबल पर एक प्लेट में रामू काका का कटा हुआ सिर

रखा हुआ था और आस पास खून ही खून फैला पड़ा था। मैं फिर यह सोचने लगा कि वह चुड़ैल मुझसे बदला लेने के लिए मेरे परिवार के पीछे पड़ गई है और अब न जाने क्या करे, मेरे शरीर में फिर से सिहरन दौड़ गई।

अचानक माँ चिल्लाईं और जब हमने उनकी तरफ देखा तो उनके कंधे पर एक कटी हुई उंगली गिरी हुई थी। एक बार फिर पापा और भैया सब साफ करने लगे बिना कोई सबूत छोड़े वरना हम अपने सबसे अच्छे हैल्पर की मौत के इल्जाम में खुद ही फंस जाते। मैं अब भी बुत बना हुआ खड़ा था। अचानक पूरे हॉल में चिता जलने की बदबू भर गई और मेरे सामने उस चुड़ैल की अंगारों जैसी लाल आँखें चमकने लगीं, अपने परिवार को लेकर मैं इतना डर रहा था कि मैं वहीं का वहीं बुत बनकर खड़ा रह गया, फिर वे लाल आँखें मेरी बांई तरफ मुड़ गई तब मुझे याद आया मेरी बांई तरफ तो पापा खड़े है और मैं पापा के सामने खड़ा हो गया और बहुत हिम्मत करके उससे कहा " तुझे जो करना है मेरे साथ कर, तेरा बदला मुझसे है तो मेरी जान ले ले पर अब मेरे परिवार की तरफ आँख उठाकर भी देखा न तो मैं तुझे छोडूँगा नहीं। " " तू मुझे मारेगा, मैं तो पहले ही मर चुकी हूँ.......तेरी वजह से........ पर......पर अब तू और तेरा परिवार मुझसे कैसे बच पाओगे? "

वह गुर्राने लगी और फिर मेरी तरफ कुछ इशारा करके कुछ बुदबुदाने लगी पर इससे पहले वो कुछ कर पाती, भैया ने उसे पकड़ लिया और वो चीखने चिल्लाते हुए गायब हो गई तब मुझे याद आया कि भैया ने अभिमंत्रित धागा पहन रखा है और वह चुड़ैल मेरे अलावा किसी को कुछ नहीं कर सकती। सोचकर थोड़ी शांति मिली पर यह शांति भी ज्यादा देर तक टिक नहीं पाई उस चुड़ैल ने मेरे सामने आकर सीधे मेरा गला पकड़ लिया और मुझे उठाकर दीवार की तरफ फेंक दिया, सब लाचार सी नजरों से मुझे देख रहे थे वह चुड़ैल फिर से मेरे सामने आ गई, इस बार उसके हाथ में तलवार थी वह बस मुझे मारने ही वाली थी कि तभी माँ ने उसके ऊपर महात्मा जी की दी हुई भभूति फेंक दी और वह चुड़ैल चीखती चिल्लाती गायब हो गई।

उसके गायब होते ही भैया के पास महात्मा जी का दिया हुआ धागा बचा हुआ था तो उन्होने मेरे हाथ पर वह बचा हुआ धागा बाँध दिया। अब हम सब सुरक्षित थे वह चुड़ैल हमारा कुछ नहीं बिगाड़ पा रही थी इसलिए गुस्से में पागल होकर कभी किसी जानवर को मारकर हमारे ऊपर फेंक रही थी तो कभी बुरी तरह से गुर्राने लग जाती, पर अब हम लोग डर को इतनी गहराई से देख चुके हैं कि इस सब से कोई फर्क नहीं पड़ रहा था, रात भर हममें से कोई नहीं सो सका, जैसे ही किसी को नींद आती, वह चुड़ैल बहुत जोर से डरावनी आवाजें निकालने लगती।

सुबह होते ही हम सभी महात्मा जी से मिलने चल दिए यह जानते हुए भी कि आज वह हमें किसी भी हाल में मंदिर तक नहीं पहुंचने देगी क्योंकि आज अमावस्या जो है और अमावस्या को न सिर्फ आत्माओं को बुलाना आसान रहता है बल्कि उनकी शक्तियां भी बढ़ जाती हैं और इसका मतलब उस चुड़ैल की शक्तियां भी बढ़ गई होंगी, क्या बाबा का दिया हुआ यह भभूति और धागा हमें बचा पाएगा। सोचते सोचते पता भी नहीं चला कि हम मंदिर वाली गली में आ गए और मंदिर गली के अंतिम छोर पर नजर आने लगा। भैया, भाभी, माँ, पापा सब एक दूसरे को बहुत खुशी और आश्चर्य से देख रहे थे कि वह चुड़ैल नहीं आई पर मुझे पता था वो जरूर आएगी और हर तरफ अंधेरा छा गया, चिता जलने की बदबू आने लगी, सामने से वह चुड़ैल हवा में उड़ती हुई हमारी कार पर बैठ गई और एक झटके में हमारी कार पलट दी, हम मंदिर के इतने पास होकर भी असहाय हो गए थे फिर एक और बुरी चीज हुई, भाभी के हाथ का धागा कार में ही कहीं उलझ कर टूट गया और इसका पता हमें तब चला जब उस चुड़ैल ने भाभी को पकड़ लिया और उनके हाथ को ऐसे चबाने लगी जैसे कोई बहुत समय से भूखा जानवर अपना शिकार खाता है। हम सब भाभी को बचाने दौड़ पर वह चुड़ैल भाभी को लेकर गाडी के दूसरी तरफ चली गई और गाड़ी में आग लगा दी हम सकड़ी गली होने के कारण दूसरी तरफ जा भी नहीं पाए और एक बार फिर उस चुड़ैल की डरावनी हँसी गूँजी पर इस गूँज के साथ एक चीख भी थी, मेरी भाभी की चीख जिसे सुनकर भैया जमीन पर गिर पड़े और एक पल के लिए हम सब बुत बन गए कि कहीं उसने भाभी को भी तो.....पर नहीं उसकी डरावनी आवाज गूँजी और वह बोली " धागा उतार दे अचिंत्य वरना हम इसे और सबको मार देंगे और फिर किसके लिए जीवित रहेगा तू? "

मुझे थोड़ी शांति मिली कि भाभी ठीक हैं और मैंने धागा उतार कर दूर फेंक दिया और वह चुड़ैल भाभी को छोड़कर हवा में उड़ती हुई मेरे सामने आ गई, उसने काला जादू करना शुरू किया और एक काली लकड़ी मेरे पैर में घोंप दी जो मेरे पैर को चीरकर जमीन में धंस गई थी, अब मैं हिल भी नहीं पा रहा था, सब मेरी हालत देखकर रो रहे थे पर पापा मंदिर की तरफ भागने लगे शायद महात्मा जी को बुलाने पर उस चुड़ैल ने पापा के पैरों पर एक पूरा पेड़ गिरा दिया, फिर वे जोर से "महात्मा जी" चिल्लाए और बेहोश हो गए, भाभी पहले ही बेहोश हो गई थी, फिर पापा और अब मैं अपने पैर के दर्द की वजह से बेहोश होने लगा।

जब मुझे होश आया तब महात्मा जी मेरे सामने खड़े हुए थे और माँ और भैया मेरी दांई तरफ खड़े रो रहे थे। मैं बहुत डर गया कहीं भाभी और पापा को कुछ.... इसके आगे मैं कुछ सोच नहीं पा रहा था।

" आप दोनों रो क्यों रहे हैं, सब ठीक हैं न? "मैंने डरते डरते पूछा।

" हाँ हर्ष संध्या और तेरे पापा ठीक हैं पर हॉस्पीटल में ऐडमिट है, उन दोनों को बहुत चोट आई हैं। "

माँ ने रोते हुए कहा।

" पर अगर उस चुड़ैल ने फिर से भाभी या पापा को कोई नुकसान पहुंचाने की कोशिश की तो? "

मैं अब भी बहुत डर रहा था।

" नहीं बेटे वे दोनों हॉस्पीटल में बिल्कुल सुरक्षित हैं क्योंकि राघव उनके साथ है। "

महात्मा जी ने मुझे समझाते हुए कहा।

यह सुनकर मेरा डर कुछ कम हुआ।

महात्मा जी - बेटे आज अमावस्या है और रात भी हो गई है, हमें अब हवन करना चाहिए।

पापा और भाभी की ऐसी हालत थी तो मेरा मन तो नहीं था कुछ करने का पर यही एक तरीका था इस सब से बचने का तो मैं उठा और हवन करने के लिए हाँ कह दिया।

महात्मा जी मंदिर के बाहर पहले से बने हवन कुण्ड में हवन सामग्री रखने लगे और बाकी तैयारियां करने लगे यहाँ मैं, माँ और भैया हम मुँह हाथ धोकर तैयार हो गए। महात्मा जी ने कहा था कि हमें हवन साफ कपड़ों में ही करना होगा क्योंकि अच्छी आत्माओं को साफ सफाई पसंद होती है और वे गंदी जगहों पर नहीं जाती हैं।

रात के करीब ग्यारह बजे हम चारों मतलब मैं, भैया, माँ और महात्मा जी हवन कुण्ड के चारों तरफ बैठ गए, मैं और महात्मा जी आमने सामने बैठे हुए थे क्योंकि मुझे हवन में आहूति देनी थी और माँ और भैया मेरी दांई और बांई तरफ बैठे हुए थे। महात्मा जी ने हमारे चारो तरफ कुछ मंत्र पढ़ते

हुए एक घेरा बनाया और फिर वे भी उस घेरे में बैठ गए। महात्मा जी ने बताया कि " इस घेरे की वजह से वह चुड़ैल न तो हम सबको देख पाएगी और न ही हवन में कोई बाधा डाल पाएगी, इस घेरे की वजह से उस चुड़ैल को बाहर से देखने पर एक गोल, बैंगनी टीला नजर आएगा। " महात्मा जी ने जैसे ही हवन करना शुरू किया, हमने देखा चारों तरफ आँधी चलने लगी, पेड़ टूटकर गिरने लगे, पर आश्चर्य, हमारे ऊपर न ही आँधी की हवाएं आ रही थी और न ही पेड़ गिर रहे थे, शायद महात्मा जी के बनाए घेरे के कारण। लगभग तीन घंटे बाद हवन रुका और हवन की आग में से दो आग के गोले ऊपर उठ कर हवा में तैरने लगे और धीरे धीरे उन्होने मानवाकृति धारण कर ली। एक मानवाकृति वेश भूषा से किसी राजा की तरह लग रही थी, चेहरे पर तेज, बड़ी बड़ी मूँछें, सिर पर ताज, हाथ में तलवार और मराठाओं के जैसे कपड़े। दूसरी मानवाकृति एक रानी की तरह लग रही थी,गहनों से लदी हुई, बहुत खूबसूरत, आज के समय में शायद ही कोई लड़की इतनी सुंदर हो। मैं महात्मा जी की तरफ प्रश्नवाचक निगाहो से देखने लगा कि क्या यह धारा और विश्वास राव हैं, तब महात्मा जी ने हाँ में गर्दन हिला कर इस बात की पुष्टि की कि यह दोनों ही धारा और विश्वास राव हैं।

मैंने अपने दोनों हाथ जोड़कर उन दोनों से कहा " मुझे माफ कर दीजिए, मुझे तो कुछ भी याद नहीं पर मैं जानता हूँ मैंने अपने पिछले जन्म में कितना बड़ा गुनाह किया है और मैं आप दोनों का गुनाहगार हूँ, अगर उस समय अचिंत्य ने जल्दबाजी न की होती तो निर्दोष धारा जी की मौत न होती और आख्या का अंतिम संस्कार किया होता तो वह चुड़ैल न बनती और न ही आपकी जान जाती, मुझे माफ कर दीजिए। मैं आज भी अपने किए की सजा भुगत रहा हूँ, आख्या मेरे साथ साथ मेरे पूरे परिवार के पीछे पड़ी हुई है, मुझे माफ कर दीजिए। "

तभी एक आवाज गूँजी ऐसा लग रहा था जैसे कहीं दूर धरातल से आवाज आ रही हो यह विश्वास राव की आवाज थी " हमने आपको अपनी मृत्यु के लिए क्षमा किया, हम दोनों को आपसे कोई शिकायत नहीं। "

" जी धन्यवाद " मैं और क्या कह सकता था।

विश्वास राव ने आगे कहा " आप हारांगुल जाएं, वहाँ गाँव के बीचोंबीच एक खँडहर नजर आएगा, कभी वह हमारा कक्ष हुआ करता था, आपको वहाँ बीचोंबीच एक त्रिशूल नजर आएगा आप उसके नीचे खुदाई करिए, आपको आख्या की अस्थियों का पहला घड़ा मिल जाएगा। इसके बाद आप गंगा के किनारे, उत्तरी दिशा में जमीन में गड़े हुए एक त्रिशूल के नीचे खुदाई करिए, आख्या की अस्थियों का दूसरा घड़ा आपको वहाँ मिलेगा तत्पश्चात आप इसी इलाके के दक्षिणपूर्वी दिशा में सीधे जाइए वहाँ भी आपको एक त्रिशूल दिखेगा उसके नीचे कुछ गहरा खोदिएगा, वहीं आपको आख्या की अस्थियों का अंतिम घड़ा मिल जाएगा। "

" महाराज क्या वे घड़े इतने सालों बाद भी वहीं मिल पाएंगे? " मैंने निराश होकर पूछा।

" क्यों नहीं, उन घड़ों पर आपके मंत्रों का कवच है, उन्हें न जमीन गला सकती है, न नदी बहा सकती है, उन घड़ो को, उन त्रिशूलों को आपके और हमारे अलावा और कोई नहीं देख सकता, वे सदियों से आपकी प्रतीक्षा में हैं। और एक बात महात्मा जी केवल आख्या की अस्थियां विसर्जित करने से कोई समाधान नहीं निकलेगा, हमें एकबार महात्मा अचिंत्य जी ने बताया था कि यदि कोई डायन बनने से पहले ही मृत्यु को प्राप्त हो जाये तो उसकी अस्थियों को विसर्जित करने से कुछ नहीं होगा अपितु अस्थियों के तीन भाग करके एक भाग को गंगा में प्रवाहित करना होगा, दूसरे भाग को महादेव का हवन करने के बाद उस हवनाग्नि में से कुछ अग्नि लेकर अस्थियों के दूसरे भाग को दोबारा जलाना होगा और अस्थियों के तीसरे भाग को वायु में उछालकर मिट्टी में मिलाना होगा क्योंकि धरती पर प्रत्येक जीव जल, अग्नि, वायु, पृथ्वी और आकाश से ही उत्पन्न होता है और उसी से उसका अंत होता है। हम जानते हैं अचिंत्य जी आप यह कर पाएंगे, हमारी शुभकामनाएं आपके साथ हैं, विजयी भवः। " कहकर विश्वास राव और धारा की आत्माऐं सफेद रंग के धुंए में बदल कर आसमान में मिल गई।

मैं - महात्मा जी क्या विश्वास राव और धारा को मुक्ति मिल गई है?

महात्मा जी - हाँ बेटे और अब हमें लगता है तुम दोनों को आख्या की अस्थियों की खोज पर निकल जाना चाहिए ताकि तुम जल्द से जल्द उन्हें विसर्जित कर सको और आग और पृथ्वी से उन अस्थियों को हम मिला देंगे।

मैं - बाबा हम दोनों मतलब मैं और कौन, क्या मेरे साथ किसी और का जाना भी जरूरी है?

महात्मा जी - हाँ बेटे तुम्हारे साथ करन जाएगा ताकि यदि वह चुड़ैल तुम्हें रोकने की कोशिश करे तो करन उसकी अस्थियां विसर्जित कर सके। पर इससे पहले हमे और तुम्हारी माता जी को एक कार्य करना होगा।

करन भैया - कैसा काम बाबा?

महात्मा जी - हम इस घेरे से बाहर निकलकर कुछ दूर तक उस चुड़ैल के लिए एक जाल बिछाकर आएंगे ताकि वह तुम दोनों का पीछा न कर सके। बोलिए क्या आप यह कर पाएंगी?

महात्मा जी ने पहले भैया और फिर माँ की तरफ देखकर कहा और माँ ने हाँ कहकर खड़ी हो गई। महात्मा जी ने कहा अब कोई कुछ नहीं बोलेगा, जरा सी भनक भी जानलेवा साबित हो सकती है और वे और माँ घेरे से बाहर निकलकर दूर चले गए, हम दोनों उसी घेरे में बैठे रह गए। करीब एक घंटे, पचास मिनट बाद महात्मा जी और माँ वापस आए ओर घेरे में बैठ गए। माँ के हाथ पर एक कपड़ा बंधा हुआ था।

महात्मा जी -हमने तुम्हारी माँ के हाथ से खून की कुछ बूंदें चारों तरफ फैला दी हैं जिससे जब तुम लोग उसकी अस्थियां ढूँढ़ने जाओ तब वह तुम्हारी माँ के खून की गंध से यहाँ तक आ सके और फिर हम उसे यहाँ कैद कर सकें। पर ध्यान रहे तुम्हें यह कार्य जितनी जल्दी हो सके, उतनी जल्दी पूर्ण करना होगा।।

मैं - बाबा हमें कम से कम पूरा एक दिन लग जाएगा, हारांगुल बहुत दूर है और फिर हमें वो जगह भी खोजनी पड़ेगी, फिर खुदाई.....

महात्मा जी - देखो हर्षद, करन हम तुम दोनों के हाथों पर यह नया तथा ज्यादा शक्तिशाली धागा बाँध रहे हैं पर इस बार चाहे वह चुड़ैल किसी को भी क्यों न मार दे, तुम दोनों यह धागा नहीं खोलोगे।

" जी महात्मा जी " कहकर हम दोनों सबसे पहले एक बाइक लेकर दक्षिणपूर्वी दिशा की तरफ चल दिए, वहाँ कुछ जंगल सा शुरू हो गया था और अंधेरा भी था, तभी मुझे एक सुनहरी रौशनी दिखी और मैंने भैया से कहा शायद वहाँ कुछ हो और फिर हम बाइक से उतरकर उस तरफ चलने लगे, पाँच मिनट चलने के बाद मुझे वहां एक त्रिशूल दिखा जिससे वही सुनहरी रौशनी निकल रही थी जो मुझे यहाँ तक लाई थी और मैंने कहा " भैया हमें यहाँ खुदाई करनी चाहिए " मैंने उस त्रिशूल को निकाल कर अलग रख दिया और हम वहाँ खुदाई करने लगे, कुछ मिनट खोदने के बाद हमें

वहाँ एक मिट्टी का छोटा सा घड़ा मिल गया, उस घड़े को बैग में रखकर भैया ने एअरपोर्ट की तरफ बाइक दौड़ा दी। एअरपोर्ट लगभग आधे घंटे दूर था, पर शायद भगवान भी यही चाहते थे कि वह चुड़ैल खत्म हो जाए इसलिए वह अभी तक यहाँ मतलब हमारे पीछे नहीं आई। हम एअरपोर्ट पहुंचे पर बदकिस्मती से फ्लाइट एक घंटे बाद की थी। हम दोनों वहीं बैठे रहे, एकदूसरे से कुछ भी कहते नहीं बन रहा था। फाइनली टाइम कट गया हमने फ्लाइट पकड़ी और कुछ ही घंटों में हम महाराष्ट्र में थे, हम हारांगुल की सीमा पर पहुंचे तो देखा विश्वास राव के बताए अनुसार वहाँ कुछ भी नहीं बचा था, कोई खंडहर नहीं था, पर एक कच्चे मकान में मुझे वही सुनहरी रौशनी दिखी जैसी देहरादून में दिखी थी, " भैया उस कच्चे मकान में वैसी ही सुनहरी रौशनी दिख रही है, जैसी देहरादून में दिखी थी " मैंने भैया से कहा और हम उस मकान में गये तो देखा वहाँ एक बुजुर्ग दंपति थे। मैंने और भैया ने उन्हें हाथ जोड़कर प्रणाम किया। अब वह सुनहरी रौशनी मुझे एक कोने में लगे त्रिशूल से निकलती दिख रही थी। " अब क्या इनके घर में खुदाई करनी होगी " भैया ने कुछ चिढ़कर कहा फिर खुद ही उस दंपति से बात करने लगे " अंकल आंटी, हम हरिद्वार से हैं, मेरे भाई की जान खतरे में है, उसकी जान बचाने के लिए हमें अ.. आपके घर में, ज.. जमीन में खुदाई करनी पड़ेगी, वहाँ एक चुड़ैल की अस्थियां गढ़ी हुई हैं " भैया ने उनसे हाथ जोड़कर कहा। तब वो आंटी बहुत तेज गुस्सा होते हुए बोली " तुम दोनों ने हमें पागल समझ रखा है क्या, गरीब हैं तो क्या तुम हमारी यह झोंपड़ी भी हमसे छीन लोगे? "

" नहीं आंटी भैया सच कह रहे हैं, अगर उस चुड़ैल की अस्थियां नहीं मिलीं, तो मैं तो क्या मेरा पूरा परिवार खत्म हो जाएगा। हमारी मदद कर दीजिए, आपका जो भी नुकसान होगा, हम उससे दोगुना भरपाई करने को तैयार हैं, प्लीज आंटी मान जाइए हमारे पास इतना वक्त नहीं है " मैंने हाथा जोड़कर कहा।

" राजेश्वरी बच्चों को खुदाई कर लेने दो, शायद यह सच कह रहे हैं, याद करो हमारा त्रिपुरारि भी हमसे हमेशा कहता था यहाँ कुछ अशुभ है, और अगर सच में किसी चुड़ैल की अस्थियां यहाँ गढ़ी हुई हैं तो अच्छा ही तो है, हमारे घर से मनहूसियत चली जाएगी। " अंकल आंटी को समझाते हुए कहने लगे।

इस सब में बहुत देर हो गई और फिर खुदाई करते हुए और ज्यादा देर लग गई। करीब दो फीट खोदने के बाद हमें वहाँ एक मिट्टी का छोटा सा घड़ा मिल गया और जब उसे खोलकर हमने अंकल आंटी को दिखाया तब उन्हें यकीन हो गया कि हम दोनों सच बोल रहे थे। भैया ने वह दूसरा घड़ा भी बैग में डाला और फिर हम हारांगुल से निकलकर एअरपोर्ट पहुंचे, इस सब में हमें दो घंटे पैंतालीस मिनट लगे, अब तक शाम के छः बज चुके थे जब हम गंगा के उत्तरी किनारे पर पहुंचे अब रात के दस बजकर सैंतालीस मिनट हो गए थे पर मुझे कहीं भी वह सुनहरी रौशनी

नजर नहीं आ रही थी पर अचानक से एक लोहे का रॉड आकर भैया के सिर पर लगा और वे दर्द से चीख पड़े, उस वक्त उनकी वह हालत मुझसे देखी नहीं जा रही थी पर अगर मुझे भैया को बचाना है तो मुझे सुनहरी रौशनी को ढूँढना ही पड़ेगा यह सोचकर मैं और आगे भागने लगा, भैया जमीन पर गिरे हुए मुझे देख रहे थे। इतने में जाने कहाँ से एक चाकू उड़ता हुआ आया और मेरे पैर में लग गया, अब हालत यह थी कि कल मेरे पैर में जो जख्म हुआ था उसके साथ साथ आज एक नया जख्म भी खून से तरबतर हो गया पर मैं हिम्मत करके भागता रहा और आखिरकार मुझे वो सुनहरी रौशनी दिख गई, मैंने और तेज भागना चालू किया, भैया अब भी लाचार सी निगाहो से मुझे देख रहे थे पर कुछ नहीं कर पा रहे थे, आखिरकार मुझे त्रिशूल भी दिख गया और मैंने जैसे ही उस त्रिशूल को निकालने के लिए हाथ बढ़ाया, एक और चाकू हवा में उड़ता हुआ आया और मेरे हाथ में बंधा धागा कट गया। अब एक नयी चुनौती मेरे सामने खड़ी थी, वह चुड़ैल मेरे सामने खड़ी थी।

इस बार उस चुड़ैल ने मुझे उठाकर त्रिशूल से इतनी दूर फेंक दिया कि मैं उसके होते हुए किसी भी हाल में नहीं उस त्रिशूल तक नहीं पहुंच सकता था। वह चुड़ैल बहुत जोर से डरावनी आवाजें निकालने लगी फिर उस चुड़ैल ने अपने नाखून तीन इंच लंबे कर लिए और मेरे दांए हाथ को धीरे धीरे चीरने लगी, मैं दर्द से चिल्लाने लगा, फिर उसने मेरे बांए हाथ को चीरना शुरू कर दिया, मेरे हाथों को चीरने के बाद उसने मेरे बांए पैर को चीर दिया और फिर मेरे दांए पैर को चीरकर हवा में ऊपर उठ गई, मैं अभी तक दर्द की वजह से चिल्लाए जा रहा था, और वह हवा में से उतरकर मुझे लातें मारने लगी और बोलने लगी " हमसे पीछा नहीं छुड़ा पाएगा तू, हम तेरी जान लेकर ही रहेंगे " मैं सोच रहा था कि हमेशा तो मैं बेहोश हो जाता था और आज क्या यह सब देखने के लिए ही होश में था। तभी मैंने देखा भैया त्रिशूल के ठीक नीचे हाथों से मिट्टी हटा रहे हैं, शायद उन्हें मुझे देखकर अंदाज़ लग गया था कि अस्थियों का तीसरा घड़ा वहीं है और उन्होने चुप चाप वह मिट्टी का छोटा सा घड़ा उठाया, उसके मुँह पर लगा कपड़ा हटा कर आख्या की अस्थियों को गांगा के पावन पानी में विसर्जित कर दिया और फिर दबे पाँव आकर उस चुड़ैल के ऊपर महात्मा जी की दी हुई रोली डाल दी, अस्थियां विसर्जित होने और रोली के कारण उस चुड़ैल की शक्तियां कमजोर पड़ गई और वह चीखती चिल्लाती गायब हो गई, भैया मुझे मुश्किल से बाइक पर बैठा पाए और बाइक दौड़ा दी, यूँ तो यह रास्ता एक घंटे, कुछ मिनट का है पर वह चुड़ैल हमारी बाइक के साथ साथ उड़ रही थी पर शुक्र है कि भैया के हाथ में धागा बंधा हुआ था, वह चुड़ैल बुरी तरह से चिल्ला रही थी और उसके चिल्लाने से हमारे कान के पर्दे फटे जा रहे थे, उसने अपने काले जादू से हर तरफ आँधी फैला दी, अब भैया के लिए बाइक चलाना और मुश्किल हो रहा था और आँधी की हवाएं, धूल मिट्टी मेरे घावों पर नमक की तरह चुभ रही थी। हम लोग दो घंटे से यह सब सहते सहते, गिरते पड़ते मंदिर पहुंच ही गए। वहाँ महात्मा जी मंदिर के बाहर उसी हवन कुण्ड में

पहले से ही हवन कर रहे थे और हम वही हवन कुण्ड के पास बैठ गए, बाबा ने मेरे माथे पर हवन कुण्ड के पास रखे एक विशेष तरह के पानी के छींटे मारे और मेरे घावों से खून बहना बंद सा हो गया पर दर्द अब भी बहुत तेज हो रहा था, यहाँ भी आँधी नहीं रुकी थी और लगभग एक घंटे बाद महात्मा जी का हवन पूरा हुआ और उन्होने हवन कुण्ड की अग्नि लेकर आख्या की अस्थियों के दूसरे घड़े में डाल दी, इस सब से वह चुड़ैल और ज्यादा बौखला गई और इस बार उसने सीधे महात्मा जी पर वार किया, अपने लंबे नाखूनों से उसने महात्मा जी के पेट को चीर दिया और उन्हें कच्चा खाने लगी, माँ तो डर से बेहोश हो गई, मैं और भैया कुछ कर पाते इससे पहले ही उसने अपने लंबे नाखून मेरे पेट में घोंप दिए और मेरे पेट को धीरे धीरे चीरने लगी, मैं दर्द से चिल्लाने लगा पर वह भैया को कुछ नहीं कर पा रही थी क्योंकि उनके हाथ में वह पवित्र धागा अभी तक बंधा हुआ था और भैया ने उठकर उसकी अस्थियों को हवा में उछालकर मिट्टी में मिला दिया। अगले ही पल वह चुड़ैल चीखती, चिल्लाती, गुर्राती हुई हवा में उठकर गायब हो गई और मैंने देखा आसमान के साथ साथ हमारी जिंदगी में भी उजाला हो गया था.... वह चुड़ैल खत्म हो गई पर फिर भी कितनों को मार दिया, न जाने कितने मासूम मारे गये खैर आखिरकार विश्वास राव और धारा को इतनी सदियों के बाद मुक्ति मिल गई और मुझे इतनी मेहनत के बाद उस चुड़ैल से मुक्ति मिल गई।

उसने मुझे जो घाव दिए, उन्हें पूरी तरह से ठीक होने में छः महीने लग गये और इस सब में मेरी नौकरी.....नहीं नहीं, मेरी नौकर छूटी नहीं बल्कि मेरा देहरादून से वापस हरिद्वार ट्रांसफ़र कर दिया गया आखिरकार मैडल्स की जगह छः अनसक्सैसफुल केसेज़ का ठप्पा जो लग गया था मुझ पर।

सबसे बड़ी बात तो यह है कि मैं, माँ, पापा, भैया, भाभी हम सब ठीक हैं पर सच में हम अगर आज हम सब जिंदा हैं तो इसका क्रेडिट सिर्फ और सिर्फ करन भैया को जाता है।

" पर हर्षद.... भाई तूने इतना सब झेला और आज दो साल बाद बता रहा है , क्यों बे मैं तेरा दोस्त नहीं था जो तू मुझे यह सब नहीं बता पाया? "

" भाई सच बताऊं, मैं आज भी किसी को यह सच नहीं बताता, तुझे तो बता दिया क्योंकि अब तू ही तो है जो मेरा सच्चा दोस्त है, अब यह इंन्विटेशन कार्ड पकड़ और मेरी और अनन्या की शादी में आ जाना चुपचाप। "